LIFESIGN HOROSCOPE

जननी जन्म सौख्यानाँ वर्धनी कल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ लिख्यते जन्म पत्रिका

Indian Astrology Software

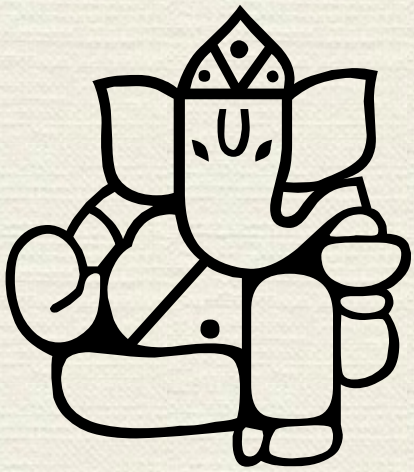

Horoscope of **sample**
Prepared using **Astro-Vision AstroSuite Online**

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पंत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु
इस कुंडली का निर्माण किया गया

पंचाग फलादेश

नाम : sample (पुरुष)

सप्ताह के दिन में। : शुक्रवार

शुक्रवार में जन्म लेने के कारण आपको सफेद और लाल रंग के वस्त्रों और चीजों के प्रति आकर्षण होगा। भूसंम्पति और खेती से आपको प्राकृतिक मोह होगा। दुसरों के दु:ख को समझकर उसमें शमिल होने के लिए आप तैयार होंगे।

जन्म नक्षत्र : कृत्तिका

आपका जन्म नक्षत्र कृत्तिका है। अन्य पुरुषों की अपेक्षा आपके जीवन में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी। जीवन में अनेक क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी। कर्तव्य बोध तो बहुत ऊँचा है। प्रतिस्पर्धाओं में और वाद-विवादों में असाधारण प्रतिभा होगी। किसी के आधीन काम करने में सन्तुष्ट नहीं है। नेतृत्व में आपकी कुशलता सर्वविदित होगी। एक आदर्श गृहस्थ का स्थान सुशोभित करने में समर्थ हैं। दूर देशों में आपको अधिक सफलता प्राप्त होगी। एक 'सज्जन' जैसे आप सदाचारों को छोड़े बिना आनन्द का अनुभव लगातार करते रहेंगे। पत्नी के साथ दूर देश वास करने का योग है। आपके मन को अस्वस्थ करनेवाले कई प्रश्न एक के बाद एक करके आते रहेंगे। आप उनका सामना करने में समर्थ होंगे। आप अपने दृढविश्वास से अपने जीवन को सुखमय बना सकेंगे। आपका दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। मन को शान्त और जीवन सुखमय बनाने के लिए स्वयं ही प्रयत्न करना होगा। कोई एक कार्यक्षेत्र में चिपक कर लंबे समय तक कार्य करना आप के लिए कठिन है। भाग्य से विशाल हृदय वाली पत्नी प्राप्त होगी। आपको जीवन सुखमय बनाना होगा। इसलिए पुरुषार्थ ही एक मात्र रास्ता है। बच्चों के बारे में चिंतित रहने की आदत हैं। जीवन के उत्तरार्द्ध में अधिक सुख प्राप्त होना संभव है। दाँत संबन्धी विकारों का परिहार काफ़ी पहले से ही किया जाये। सिर का दर्द, सिर के बालों का गिरना आप के लिए बेचैनी पैदा कर सकता है। मानसिक व्यथा भोगने के बदले हर समस्या का समाधान खोजना बुद्धिमता पूर्ण होगा। स्वधर्म निपुण, निद्राप्रिय, विद्याभिलाषी, आधुनिक विचार पोषक, गंभीर, सम्मानप्रिय, सत्संगी, दानशील और स्वाध्यायी होना आपके अतिरिक्त गुण होंगे। सामान्य स्थिति से ऊँची स्थिति में पहुँचने वालों में आपकी गणना होगी।

तिथि : प्रथमा

आपका जन्म प्रथम तिथि में हुआ है। आपको दस्तकारी में अभिरुचि है। आप मन से धैर्यशील हैं। आप सज्जनों के प्रेमी और आदर सत्कार करने के आदि हैं। आप एक अच्छे तत्वचिंतक भी है। मानव मूल्यों और आदर्शों में आपका ऊँचा स्थान है। आप रहस्यमय बातों के बारे में जानने के इच्छुक हैं। आपका परिवार बड़ा होगा। आपकी विद्वता, शालीनता और नम्रतापूर्ण व्यवहार दूसरों के लिए अनुकरणीय होगा।

करण : बालव

बालव करण में जन्म लेने के कारण आप एक स्वतंत्र चिन्तक होंगे। अपने आपके ऊपर नियंत्रण करने से आप स्वयं को रोकते हैं। रिश्तेदारों को आप ज्यादा महत्व नहीं देते।

नित्य योग : वरियान

आपका जन्म वरीयान नित्ययोग में होने से आप अपने जीवन में आर्दा से चलने वाले होंगे। आपका जीवन श्रेष्ठ तत्वों से और उत्तम चिंतन से नियंत्रित रहेगा। आपका जीवन श्रेष्ठ जीवन जीने का एक नमूना बन पायेगा। आप अपने सगे संबन्धियों के साथ विविधतापूर्ण व्यवहार रख पायेंगे। दूसरों केलिए अनुकरणीय रहेंगे। धन और बन्धुबल आप को प्राप्त है। अपके आत्मविश्वास, धैर्य और योग्यता से शत्रुओं को भी आश्चर्य होगा। अपने जीवनसाथी के प्रति मन में छिपा हुआ अनुराग अभिव्यक्त करने में आप असफल रहेंगे।

नाम	: sample
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 11 नवम्बर 2011 शुक्रवार
जन्म समय(Hr.Min.Sec)	: 11:11:00 AM Standard Time
समय क्षेत्र (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थान	: Khatu
रेखांश&अक्षांश(Deg.Mins)	: 75.24 पूर्व, 27.22 उत्तर दिशा
अयनांश	: चैत्रपक्ष = 24 डिग्री. 1 मिनिट. 37 सेकेन्ड
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: कृत्तिका - 1
जन्म राशी - राशी स्वामी	: मेष - मंगल
लग्न - लग्न स्वामी	: धनु - गुरु
तिथि	: प्रथमा, कृष्णपक्ष

सूर्योदय	: 06:45 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 05:39 PM
दिनमान(Hrs. Mins)	: 10.54
दिनमान(Nazhika.Vinazhika)	: 27.15
स्थानीय समय	: Standard Time - 28 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शुक्रवार
कलिदिन	: 1867411
दशा पद्धति	: विंषोत्तरी, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र स्वामी	: सूर्य
गण, योनी, पशु	: असुर, स्त्री, भेड
पक्षी, वृक्ष	: पुल्लू पक्षीआर्यमाऊ, अंजीर
चन्द्र अवस्था	: 2 / 12
चन्द्र वेला	: 6 / 36
चन्द्र क्रिया	: 10 / 60
दग्ध राशी	: तुला,मकर
करण	: बालव
नित्य योग	: वरियान
सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान	: तुला - विशाखा
अंगादित्य का स्थिति	: हाथ
Zodiac sign (Western System)	: Scorpio

योग बिंदु - योगी नक्षत्र	: 326:31:25 - पूर्वाभाद्रपदा
योगी ग्रह	: गुरु
दुय्यम योगी	: शनी
अवयोगी नक्षत्र - ग्रह	: कृत्तिका - सूर्य
आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश	: शनी - कन्या
अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	: चंद्र
अरूढ लग्न (पद लग्न)	: सिंह
धन अरूढ	: वृषभ

ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्युन और प्लूटो को भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - वृश्चिक

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला
लग्न	286:57:31	गुरु	33:32:24 वक्री
चंद्र	52:46:3	शनी	203:34:39
सूर्य	228:28:35	यूरेनस	0:59:24 वक्री
बुध	250:49:53	नेप्टयून	328:8:15
शुक्र	251:1:9	प्लूटो	275:39:37
मंगल	150:1:48	अयन	255:40:1

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्यातिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायण रेखांश को घटा कर निरायण मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं:

चैत्रपक्ष = 24 डिग्री. 1 मिनिट. 36 सेकेन्ड.

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
लग्न	262:55:54	धनु	22:55:54	पूर्वाषाढा	3
चंद्र	28:44:26	मेष	28:44:26	कृत्तिका	1
सूर्य	204:26:58	तुला	24:26:58	विशाखा	2
बुध	226:48:17	वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा	1
शुक्र	226:59:33	वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा	1
मंगल	126:0:11	सिंह	6:0:11	मघा	2
गुरु	9:30:47	मेष	9:30:47 वक्री	अश्विनी	3
शनी	179:33:2	कन्या	29:33:2	चित्रा	2
राहु	231:38:24	वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा	2
केतु	51:38:24	वृषभ	21:38:24	रोहिणी	4
गुलिक	231:31:54	वृश्चिक	21:31:54	ज्येष्ठा	2

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पूर्वाषाढा	शुक्र	शनी	शुक्र
चंद्र	कृत्तिका	सूर्य	मंगल	शनी
सूर्य	विशाखा	गुरु	बुध	शुक्र
बुध	ज्येष्ठा	बुध	बुध	बुध
शुक्र	ज्येष्ठा	बुध	बुध	केतु
मंगल	मघा	केतु	राहु	गुरु
गुरु	अश्विनी	केतु	शनी	शनी
शनी	चित्रा	मंगल	शनी	राहु
राहु	ज्येष्ठा	बुध	सूर्य	चंद्र
केतु	रोहिणी	चंद्र	शुक्र	गुरु
गुलिक	ज्येष्ठा	बुध	शुक्र	केतु

निरयन सारिणी संक्षिप्त (डिग्री. मिनिट. सेकेन्ड.)

ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	धनु	22:55:54	पूर्वाषाढा/3	गुरु	मेष	9:30:47R	अश्विनी/3
चंद्र	मेष	28:44:26	कृत्तिका / 1	शनी	कन्या	29:33:2	चित्रा/2
सूर्य	तुला	24:26:58	विशाखा / 2	राहु	वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा /2
बुध	वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा /1	केतु	वृषभ	21:38:24	रोहिणी /4
शुक्र	वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा /1	गुलिक	वृश्चिक	21:31:54	ज्येष्ठा /2
मंगल	सिंह	6:0:11	मघा /2				

राशी

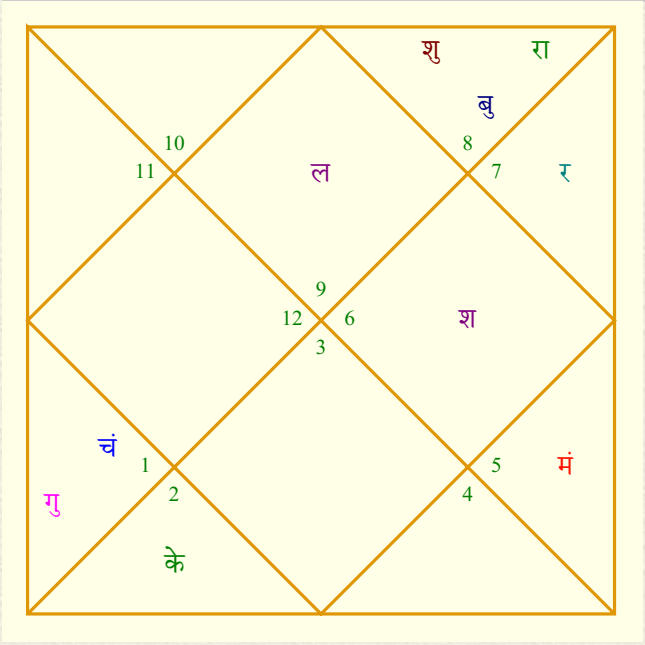

जन्म के समय दशा का भोग्य काल = सूर्य 5 साल, 0 मास, 24 दिन

नवांश

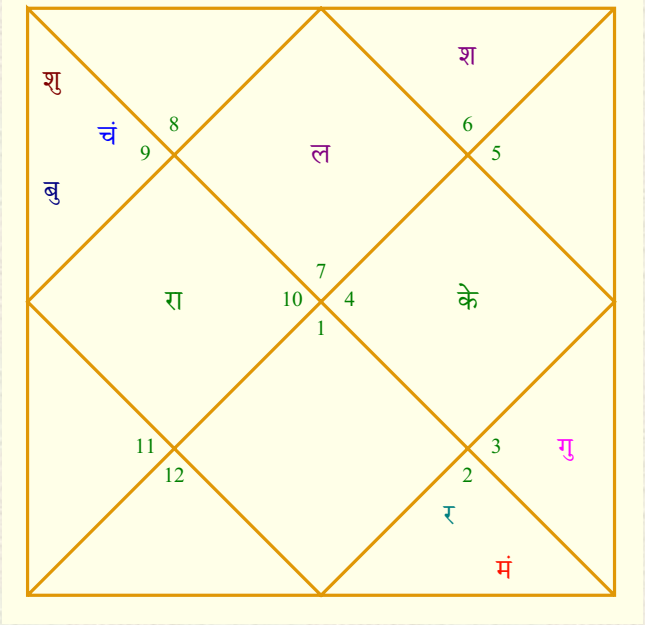

विशिष्ट राशी चक्र

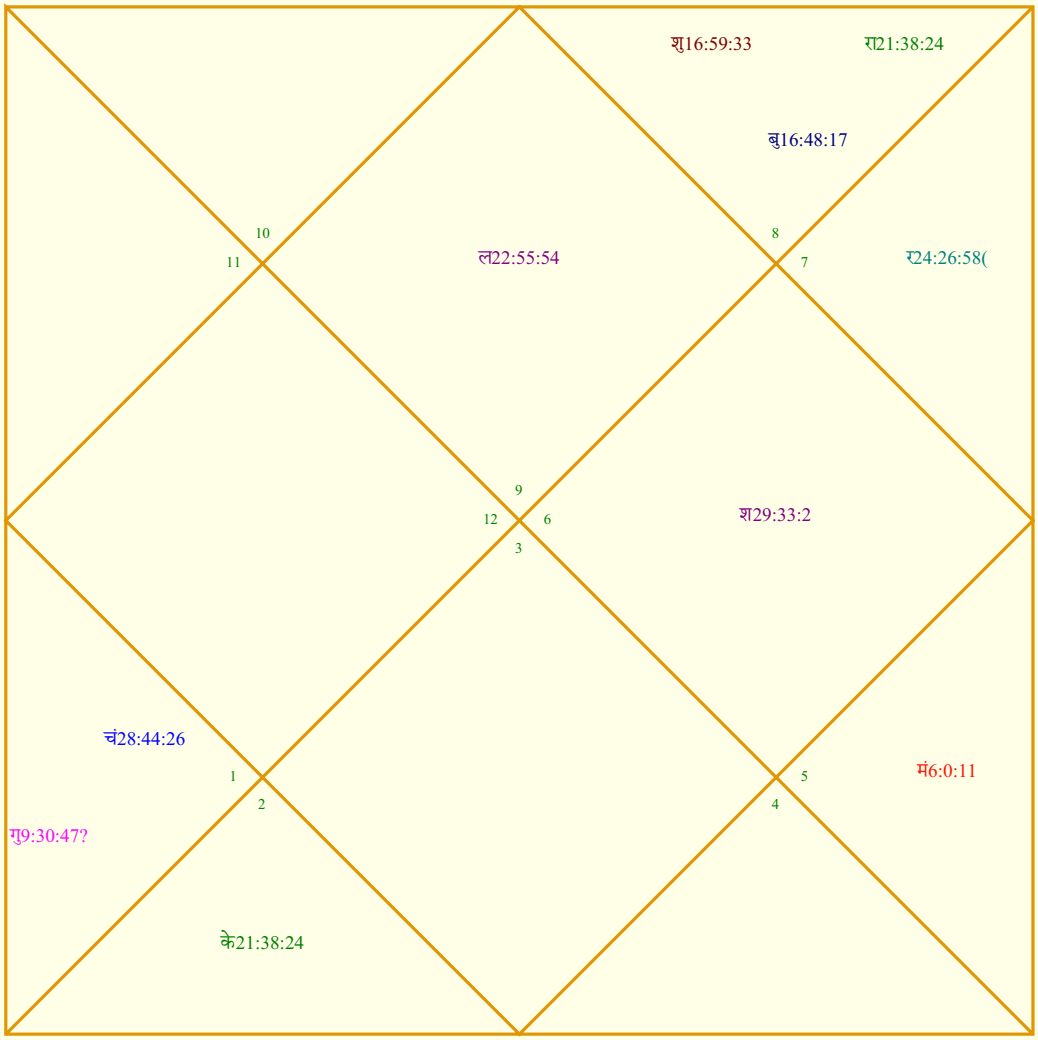

? वक्री) उच्च का (नीच का ; सयहोग

नवांश : चं = धनु र = वृषभ बु = धनु शु = धनु मं = वृषभ गु = मिथुन श = कन्या रा = मकर के = कर्क ल = तुला

भाव कुंडली

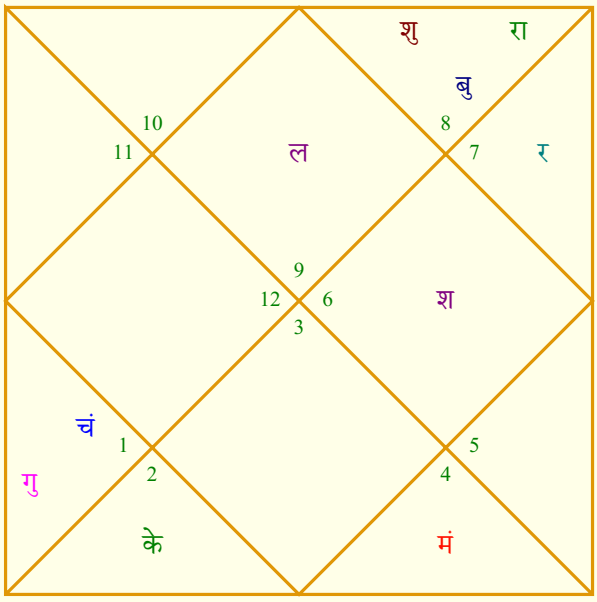

भाव कोष्टक

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	अन्त्य (अंत) डिग्री:मिनिट:सेकेन्ड	ग्रह भाव स्थिती
1	247:55:54	262:55:54	277:55:54	
2	277:55:54	292:55:54	307:55:54	
3	307:55:54	322:55:54	337:55:54	
4	337:55:54	352:55:54	7:55:54	
5	7:55:54	22:55:54	37:55:54	चं,गु
6	37:55:54	52:55:54	67:55:54	के
7	67:55:54	82:55:54	97:55:54	
8	97:55:54	112:55:54	127:55:54	मं
9	127:55:54	142:55:54	157:55:54	
10	157:55:54	172:55:54	187:55:54	श
11	187:55:54	202:55:54	217:55:54	र
12	217:55:54	232:55:54	247:55:54	बु,शु,रा,मा

सुदर्शन चक्र

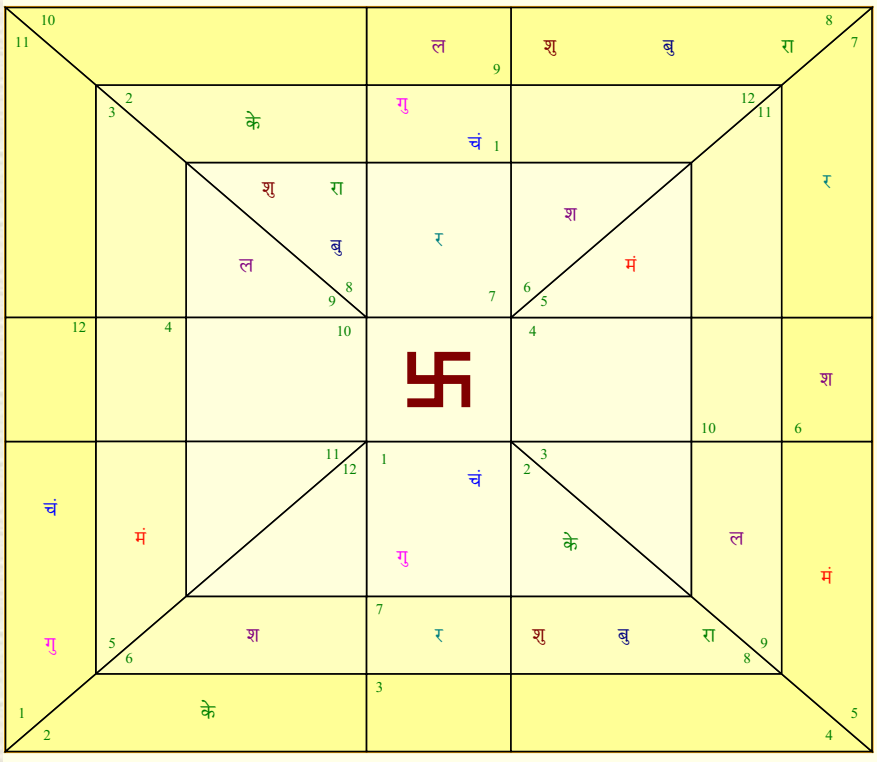

चं = चंद्र र = सूर्य बु = बुध शु = शुक्र मं = मंगल गु = गुरु श = शनी रा =राहु के = केतु

उपग्रह

हर ग्रह की स्तिथिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार है।

धुमादी योग के उपग्रह

ग्रह	उपग्रह	गणना प्रणाली
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्री. 20 मिनिट.
राहु	व्यतिपात	360 - धूम
चंद्र	परिवेश	180 + व्यतिपात
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतु	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्री. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्च्यात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते हैं। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता।जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागो में विभाजीत पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयाग किया गया है।प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहाधीपती के आधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्तिथि अनुसार एक तीसरी पद्धति का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार से प्राप्त गुणफल को 'एस्ट्रो विज़न' कुंडली में 'मांडी' कहा गया है और जन्मपत्रिका मे मुख्य ग्रह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 घटि	10 घटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
बुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकृत प्रणाली : लग्न के अंन्तिम चरणों मे।

ग्रह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	9:28:33	10:50:18
बुध	अर्धप्रहर	13:33:48	14:55:33
मंगल	मृत्यु	12:12:3	13:33:48
गुरु	यमघंट	14:55:33	16:17:18
शनी	गुलिक	8:6:48	9:28:33

रेखांश उपग्रह

उपग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
काल	257:47:45	धनु	17:47:45	पूर्वाषाढा	2
अर्धप्रहर	331:43:0	मीन	1:43:0	पूर्वाभाद्रपदा	4
मृत्यु	303:50:10	कुंभ	3:50:10	धनिष्टा	4
यमघंट	0:7:19	मेष	0:7:19	अश्विनी	1
गुलिक	238:45:55	वृश्चिक	28:45:55	ज्येष्ठा	4
परिवेश	202:13:1	तुला	22:13:1	विशाखा	1
इन्द्रचाप	157:46:58	कन्या	7:46:58	उत्तरा	4
व्यतिपात	22:13:1	मेष	22:13:1	भरनी	3
उपकेतु	174:26:58	कन्या	24:26:58	चित्रा	1
धूम	337:46:58	मीन	7:46:58	उत्तराभाद्रपदा	2

उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	पूर्वाषाढा	शुक्र	मंगल	बुध
अर्धप्रहर	पूर्वाभाद्रपदा	गुरू	राहु	गुरू
मृत्यु	धनिष्ठा	मंगल	शुक्र	गुरू
यमघंट	अश्विनी	केतु	केतु	शुक्र
गुलिक	ज्येष्ठा	बुध	शनी	शुक्र
परिवेश	विशाखा	गुरू	शनी	बुध
इन्द्रचाप	उत्तरा	सूर्य	शुक्र	शुक्र
व्यतिपात	भरनी	शुक्र	शनी	शनी
उपकेतु	चित्रा	मंगल	राहु	गुरू
धूम	उत्तराभाद्रपदा	शनी	केतु	गुरू

उपग्रह राशी

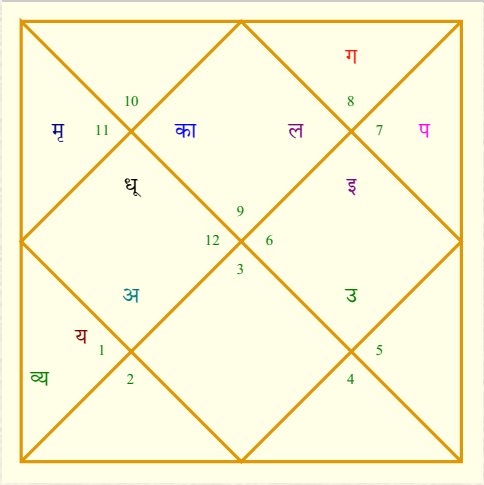

का = काल अ = अर्धप्रहर मृ = मृत्यु य = यमघंट ग = गुलिक प = परिवेश इ = इन्द्रचाप व्य = व्यतिपात उ = उपकेतु धू = धूम

कारकांश (जेमिनी सूत्र)

कारक	ग्रह
1 आत्मकारक (आत्मा)	शनी कारकांश: कन्या
2 अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	चंद्र
3 भातृकारक (भाई / बहन)	सूर्य
4 मातृकारक (माता)	शुक्र
5 पुत्र (संतान)	बुध
6 जाति (संबंधी)	गुरू
7 दारा (पति या पत्नी)	मंगल

अरूढ पद (जेमिनी सूत्र)

कोड	अरूढ / पद	राशी
P1	अरूढ लग्न (पद लग्न)	सिंह
P2	धन अरूढ	वृषभ
P3	पराक्रम भातृपद	मेष
P4	मात्र (सुख)	वृषभ
P5	मंत्र / पुत्र पद	धनु
P6	रोग / शत्रु पद	वृषभ
P7	धर / कलत्र /स्त्रीपद	मेष
P8	मृत्यु / मरण / आयुपद	मकर
P9	पित्र / भाग्य / धर्मपद	धनु
P10	कर्म / राज्यपद	मकर
P11	लाभ / आयपद	धनु
P12	व्यय / उपपद	वृषभ

अरूढ चक्र

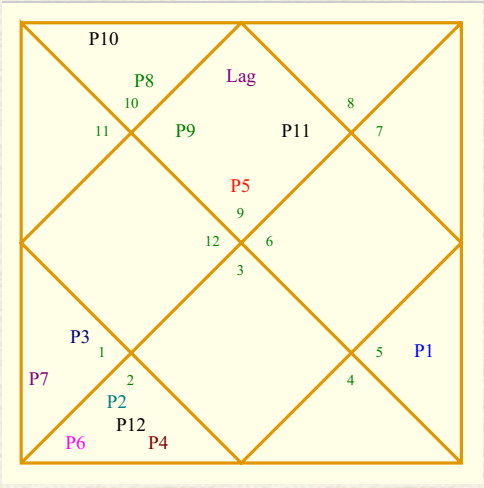

षोढसवर्ग तालिका

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	9	1	7	8:	8:	5	1	6:	8:	2:	8:
होरा	4:	4:	4:	5	5	5	5	5	5	5	5
द्रेष्क्रान	5	9	3	12:	12:	5	1	2:	4:	10:	4:
चतुर्थांश	6:	10:	4:	2:	2:	5	4:	3	2:	8:	2:
सप्तांश	2:	7	12:	5	5	6:	3	6:	7	1	7
नवांश	7	9	2:	9	9	2:	3	6:	10:	4:	10:
दशांश	4:	10:	3	9	9	7	4:	11	11	5	11
व्दादशांश	6:	12:	4:	2:	2:	7	4:	5	4:	10:	4:
सोडशांश	9	4:	2:	1	2:	8:	6:	12:	4:	4:	4:
विशान्ष	8:	8:	5	8:	8:	1	7	12:	11	11	11
चतुर्विंशांश	11	3	12:	5	5	9	12:	3	9	9	9
भम्श	9	2:	5	1	1	6:	9	6:	5	11	5
त्रिंशांश	3	7	3	12:	12:	11	11	8:	10:	10:	10:
खवेदांश	7	3	9	5	5	9	1	10:	11	11	11
अक्षवेदांश	7	8:	1	6:	6:	2:	3	5	1	1	1
शष्टियांश	6:	10:	7	5	5	5	8:	5	3	9	3
ओजराशी गणना	9	7	9	9	8	11	10	7	9	9	9

1 - मेष 2 - वृषभ 3 - मिथुन 4 - कर्क 5 - सिंह 6 - कन्या
7 - तुला 8 - वृश्चिक 9 - धनु 10 - मकर 11 - कुंभ 12 - मीन

वर्गोत्तम

शनी वर्गोतम में है।

षोढसवर्ग अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	गु	=मं	~शु	=मं	=मं	+र	+मं	+बु	=मं	=शु	मं
होरा	चं	^चं	+चं	+र	~र	+र	+र	~र	~र	+र	र
द्रेष्क्रान	र	=गु	=बु	=गु	=गु	+र	+मं	+शु	=चं	~श	चं
चतुर्थांश	बु	=श	+चं	+शु	^शु	+र	+चं	+बु	+शु	+मं	शु
सप्तांश	शु	=शु	+गु	+र	~र	~बु	~बु	+बु	+शु	+मं	शु
नवांश	शु	=गु	~शु	=गु	=गु	=शु	~बु	+बु	+श	=चं	श
दशांश	चं	=श	=बु	=गु	=गु	=शु	+चं	^श	+श	+र	श
व्दादशांश	बु	=गु	+चं	+शु	^शु	=शु	+चं	~र	=चं	~श	चं
सोडशांश	गु	^चं	~शु	=मं	^शु	^मं	~बु	=गु	=चं	=चं	चं
विशान्ष	मं	=मं	^र	=मं	=मं	^मं	~शु	=गु	+श	~श	श
चतुर्विंशांश	श	+बु	+गु	+र	~र	+गु	^गु	+बु	~गु	+गु	गु
भम्श	गु	=शु	^र	=मं	=मं	~बु	^गु	+बु	~र	~श	र
त्रिंशांश	बु	=शु	=बु	=गु	=गु	=श	=श	~मं	+श	~श	श
खवेदांश	शु	+बु	+गु	+र	~र	+गु	+मं	^श	+श	~श	श
अक्षवेदांश	शु	=मं	+मं	^बु	+बु	=शु	~बु	~र	=मं	+मं	मं
शष्टियांश	बु	=श	~शु	+र	~र	+र	+मं	~र	+बु	+गु	बु

^ स्ववर्ग + मैत्रीपूर्ण = सम ~ शत्रु

वर्ग भेद

स्ववर्ग और उच्च वर्ग के लिए अंक दिए गए हैं

ग्रह	षढवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोढसवर्ग
चंद्र	1-...	1-...	2-पारिजातांश	3-कुसुमांश
सूर्य	0-	0-	0-	3-कुसुमांश
बुध	0-	0-	0-	1-...
शुक्र	3-व्यजनांश	3-व्यजनांश	4-गोपुरांश	5-कन्दुकांश
मंगल	0-	0-	1-...	2-भेदकांश
गुरु	1-...	1-...	2-पारिजातांश	5-कन्दुकांश
शनी	0-	0-	1-...	2-भेदकांश

षोढसवर्ग तालिका

राशी[D1]

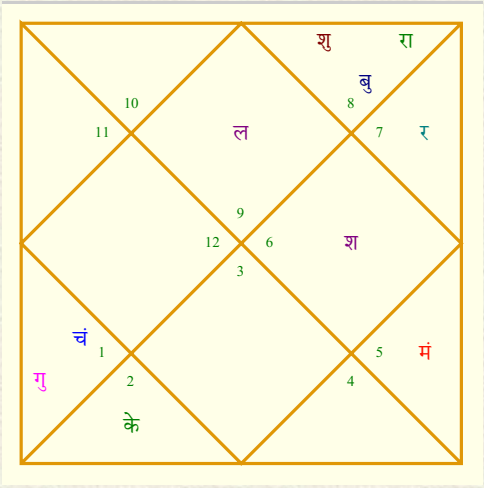

होरा[D2]

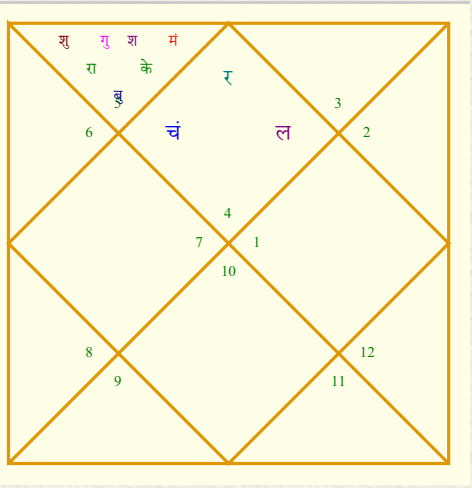

द्रेष्काण[D3]

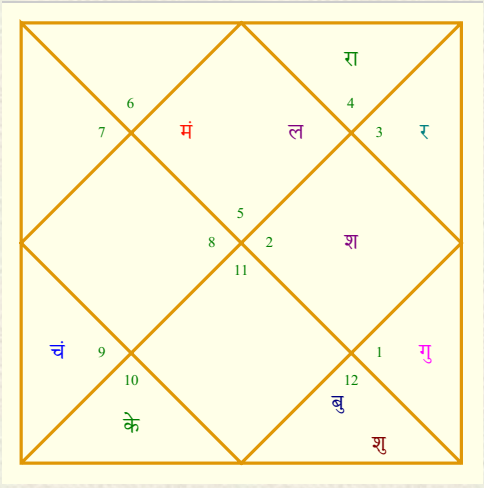

चतुर्थांश[D4]

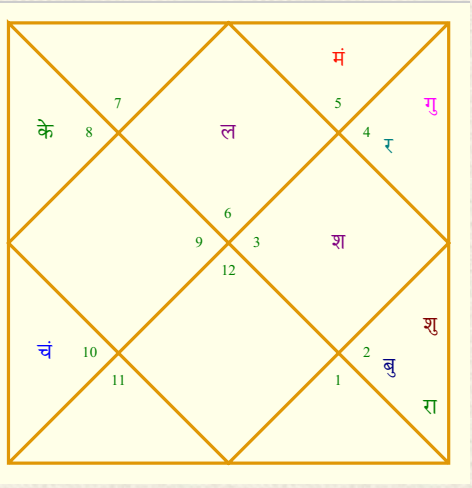

सप्तांश[D7]

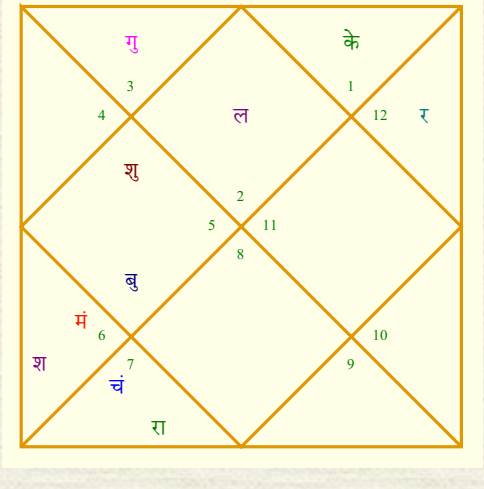

नवांश[D9]

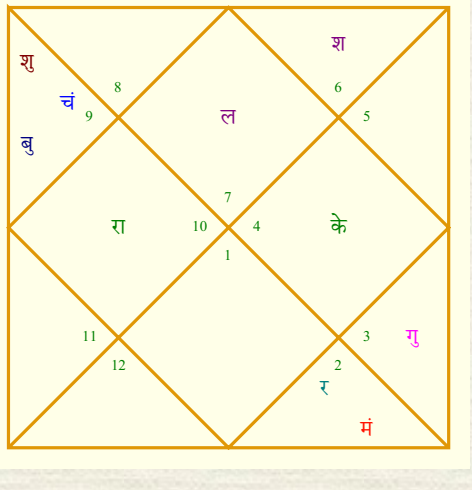

दशांश[D10]

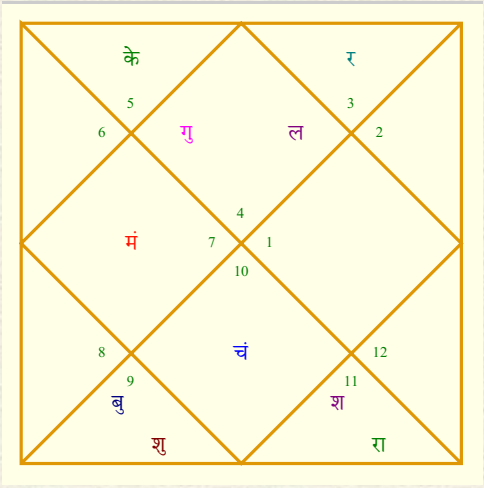

व्दादशांश[D12]

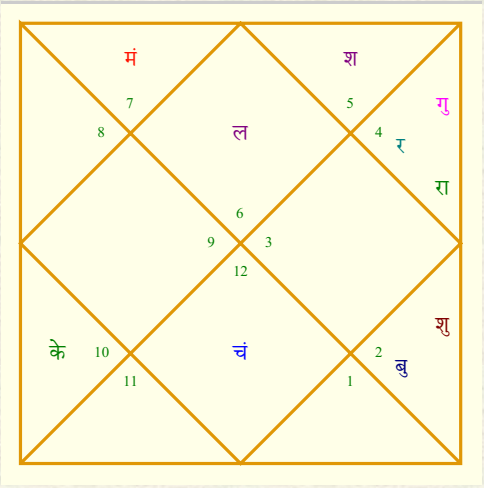

सोडशांश[D16]

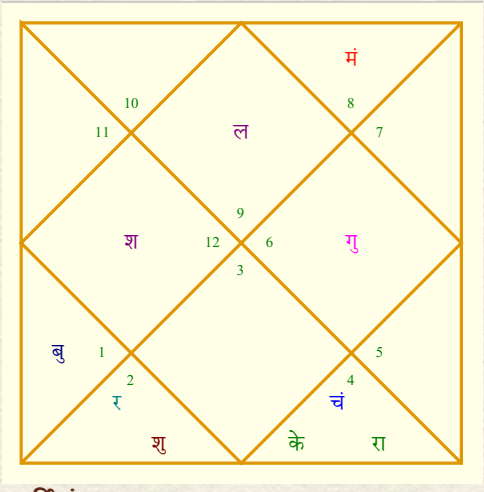

विशान्ष[D20]

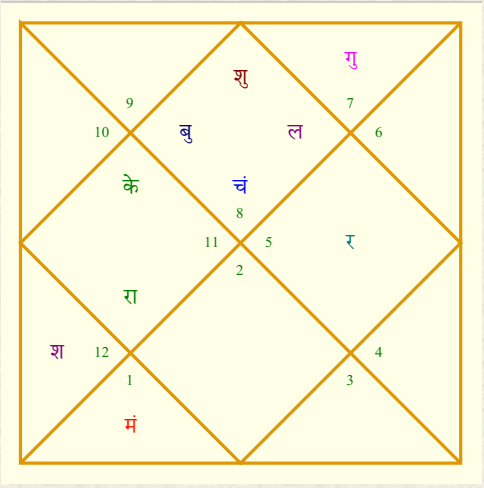

चतुर्विंशांश[D24]

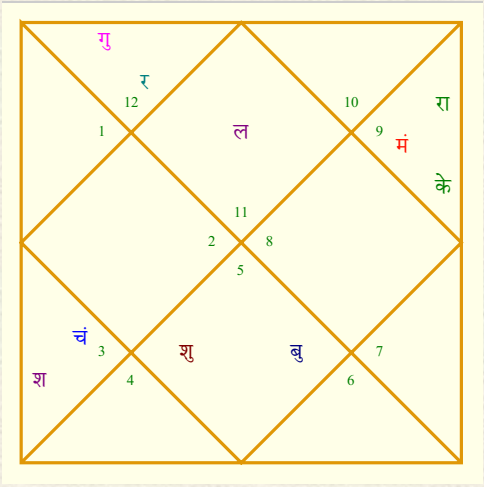

भम्श[D27]

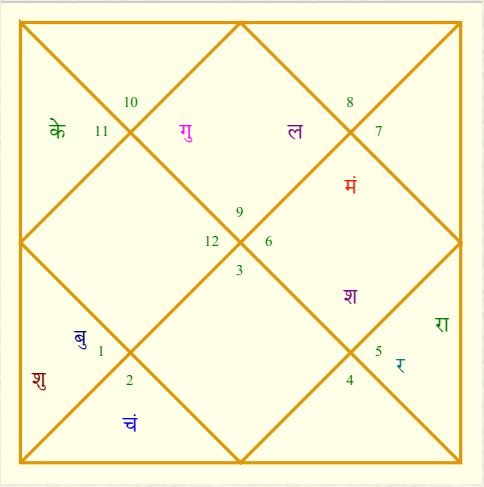

त्रिंशांश[D30]

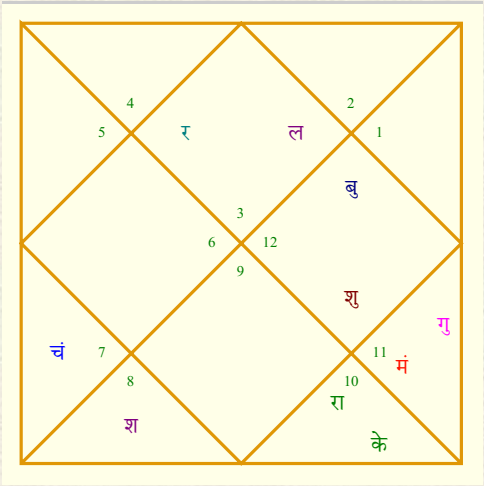

खवेदांश[D40]

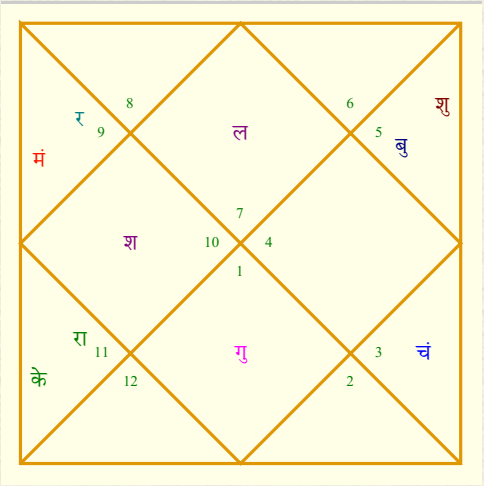

अक्षवेदांश[D45]

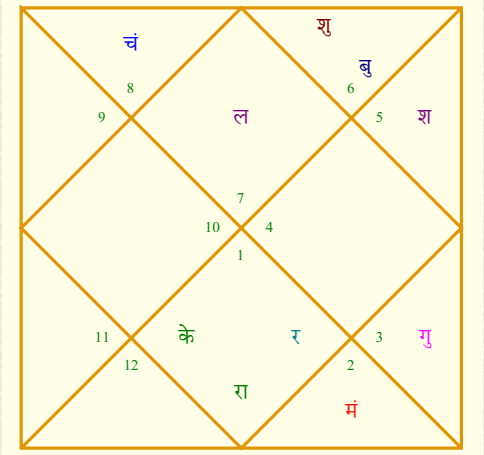

शष्टियांश[D60]

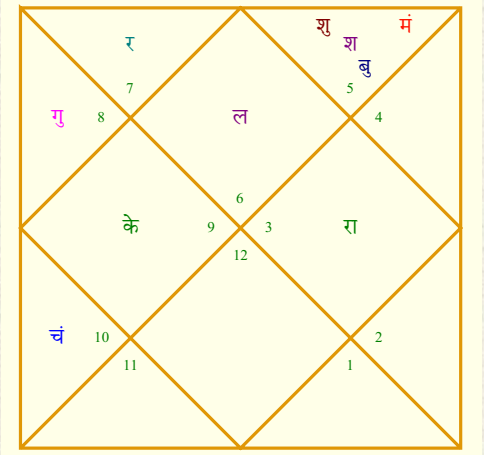

प्रस्तार अष्टकवर्ग - चंद्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1			1	1			4
वृषभ		1	1	1	1			1	5
मिथुन	1		1		1				3
कर्क		1		1		1	1		4
सिंह		1	1	1					3
कन्या	1		1	1	1			1	5
तुला	1				1	1		1	4
वृश्चिक			1			1	1		3
धनु		1			1				2
मकर	1		1	1	1	1	1		6
कुंभ	1		1	1		1	1	1	6
मीन		1	1	1		1			4
कुल	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तार अष्टकवर्ग - सूर्य

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष		1	1	1	1		1		5
वृषभ		1		1	1		1	1	5
मिथुन	1	1			1		1		4
कर्क		1	1				1		3
सिंह		1	1		1	1			4
कन्या	1		1		1	1	1	1	6
तुला		1	1	1			1	1	4
वृश्चिक		1			1			1	3
धनु						1	1		2
मकर	1	1	1						3
कुंभ	1				1	1		1	4
मीन			1		1		1	1	4
कुल	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तार अष्टकवर्ग - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष			1		1		1		3
वृषभ	1				1		1	1	4
मिथुन		1		1	1		1		4
कर्क	1		1	1			1	1	5
सिंह		1	1		1				3
कन्या	1	1	1	1	1	1	1	1	8
तुला			1				1	1	3
वृश्चिक	1		1	1	1	1			5
धनु				1			1	1	3
मकर	1		1	1				1	4
कुंभ	1	1		1	1	1			5
मीन		1	1	1	1	1	1	1	7
कुल	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तार अष्टकवर्ग - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1		1		1		1	1	5
वृषभ	1	1					1		3
मिथुन	1			1	1		1		4
कर्क	1		1	1	1		1	1	6
सिंह	1	1		1		1		1	5
कन्या		1	1	1					3
तुला					1			1	2
वृश्चिक	1			1		1	1		4
धनु	1			1	1	1	1	1	6
मकर			1	1	1	1	1	1	6
कुंभ	1			1		1		1	4
मीन	1		1	1				1	4
कुल	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तार अष्टकवर्ग - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष			1	1			1		3
वृषभ					1		1	1	3
मिथुन	1			1	1		1		4
कर्क		1					1		2
सिंह		1			1				2
कन्या	1		1	1	1	1	1	1	7
तुला				1				1	2
वृश्चिक					1				1
धनु		1					1	1	3
मकर			1			1			2
कुंभ	1	1			1	1		1	5
मीन		1	1		1	1	1		5
कुल	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तार अष्टकवर्ग - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष		1	1	1		1		1	5
वृषभ	1	1			1	1		1	5
मिथुन		1			1	1		1	4
कर्क		1	1	1		1			4
सिंह	1	1	1	1	1		1	1	7
कन्या			1	1	1			1	4
तुला	1	1				1		1	4
वृश्चिक		1	1		1	1	1		5
धनु	1	1	1	1				1	5
मकर		1				1	1	1	4
कुंभ	1		1		1	1	1		5
मीन			1	1	1			1	4
कुल	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तार अष्टकवर्ग - शनी

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष		1	1	1					3
वृषभ		1			1			1	3
मिथुन	1		1		1				3
कर्क		1	1		1		1		4
सिंह		1	1			1			3
कन्या	1		1	1		1		1	5
तुला		1	1	1	1			1	5
वृश्चिक		1					1		2
धनु					1			1	2
मकर		1			1		1		3
कुंभ	1					1	1	1	4
मीन						1		1	2
कुल	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष	4	5	3	5	3	5	3	28
वृषभ	5	5	4	3	3	5	3	28
मिथुन	3	4	4	4	4	4	3	26
कर्क	4	3	5	6	2	4	4	28
सिंह	3	4	3	5	2	7	3	27
कन्या	5	6	8	3	7	4	5	38
तुला	4	5	3	2	2	4	5	25
वृश्चिक	3	3	5	4	1	5	2	23
धनु	2	2	3	6	3	5	2	23
मकर	6	3	4	6	2	4	3	28
कुंभ	6	4	5	4	5	5	4	33
मीन	4	4	7	4	5	4	2	30
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चंद्र अष्टकवर्ग 49

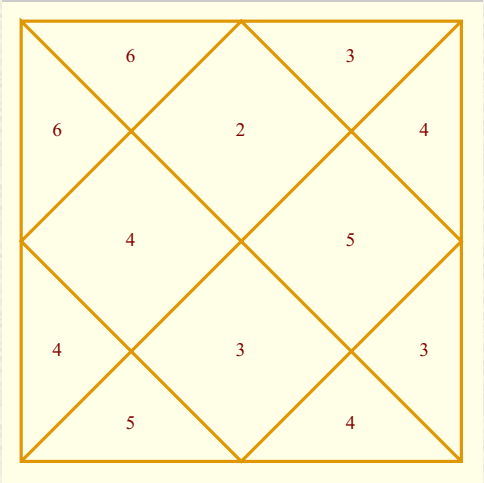

सूर्य अष्टकवर्ग 48

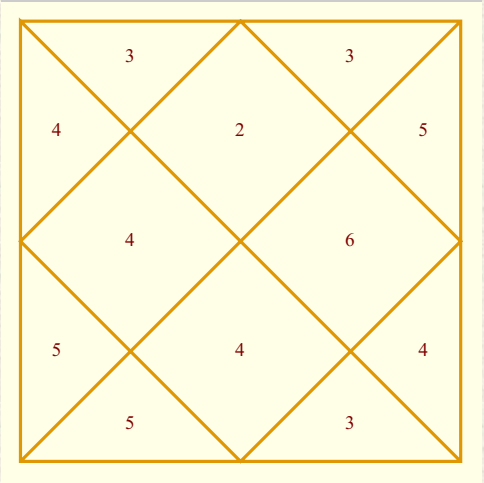

बुध अष्टकवर्ग 54

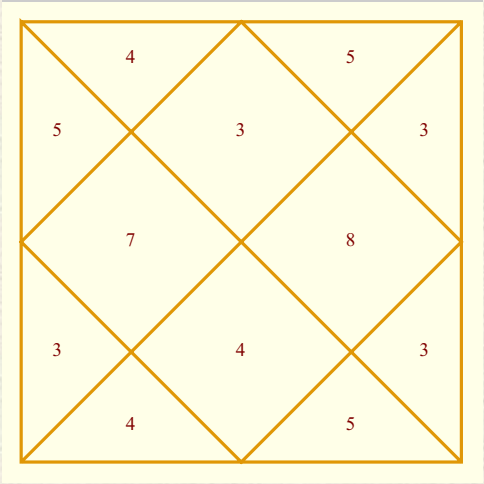

शुक्र अष्टकवर्ग 52

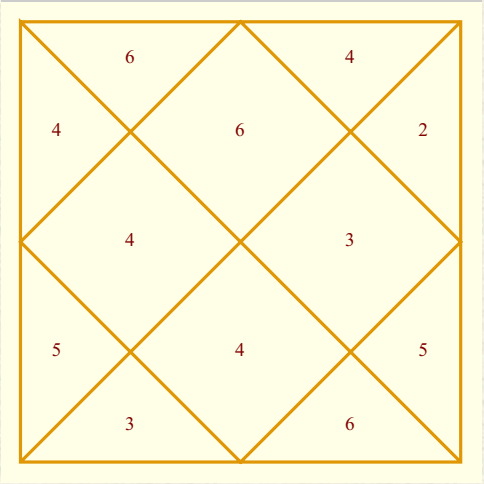

मंगल अष्टकवर्ग 39

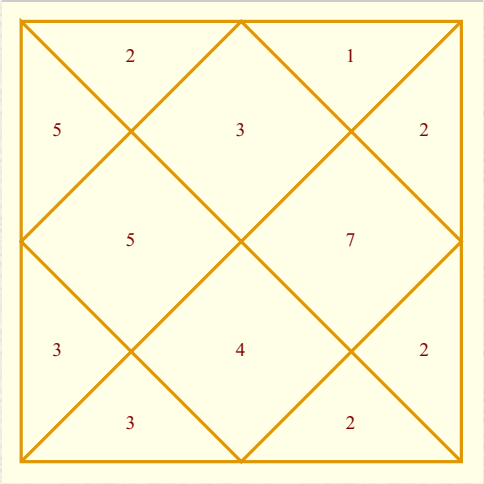

गुरु अष्टकवर्ग 56

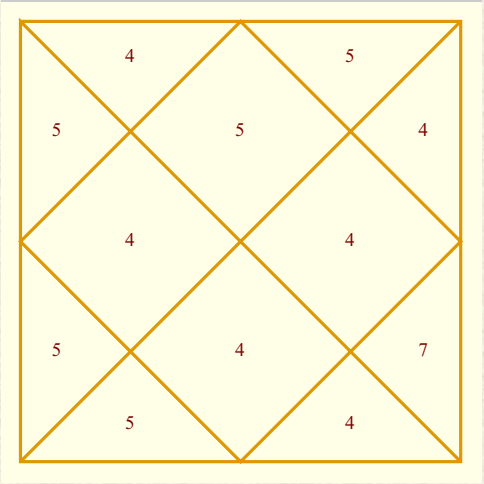

शनी अष्टकवर्ग 39

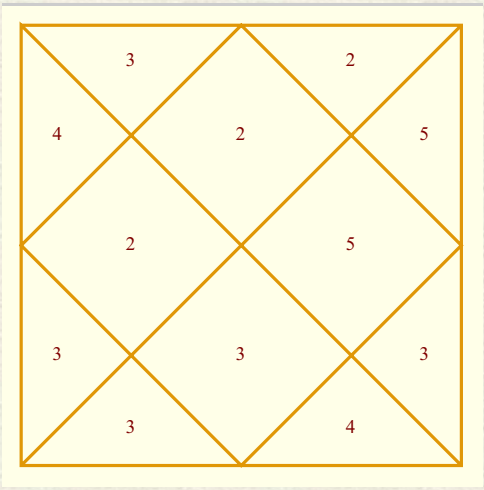

सर्व अष्टकवर्ग 337

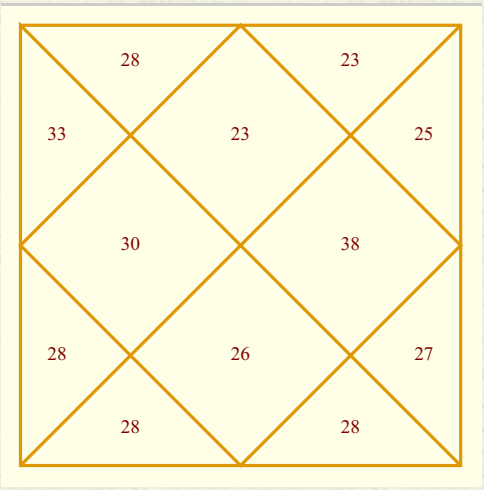

अष्टकवर्ग - त्रिकोण हर्रास

चंद्र अष्टकवर्ग 10

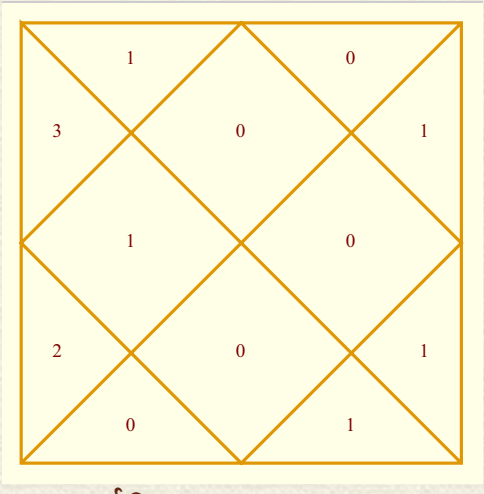

सूर्य अष्टकवर्ग 12

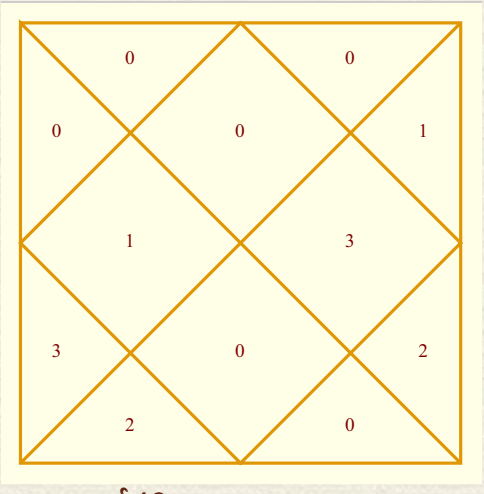

बुध अष्टकवर्ग 9

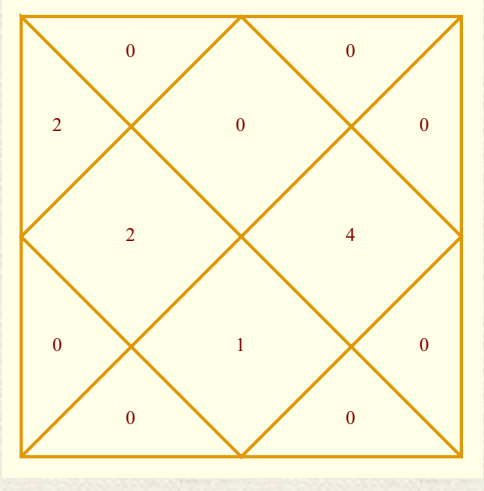

शुक्र अष्टकवर्ग 10

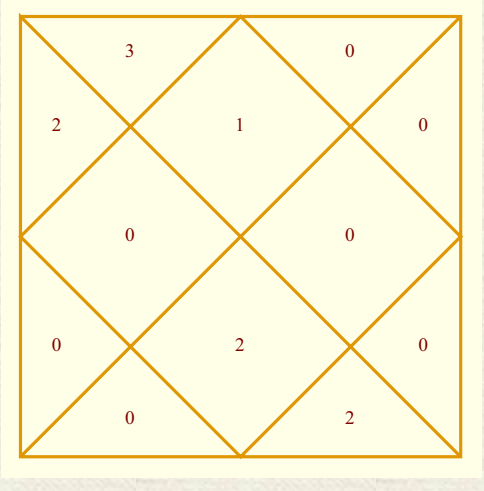

मंगल अष्टकवर्ग 18

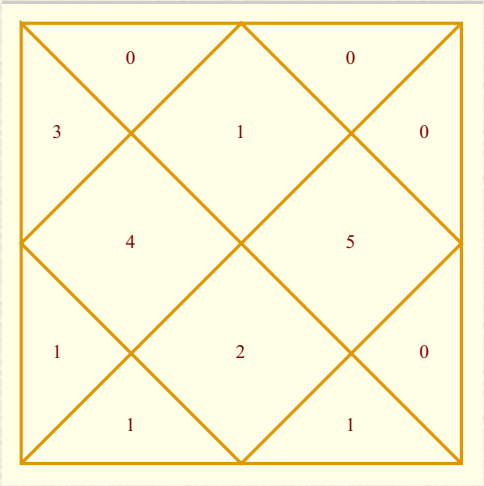

गुरु अष्टकवर्ग 5

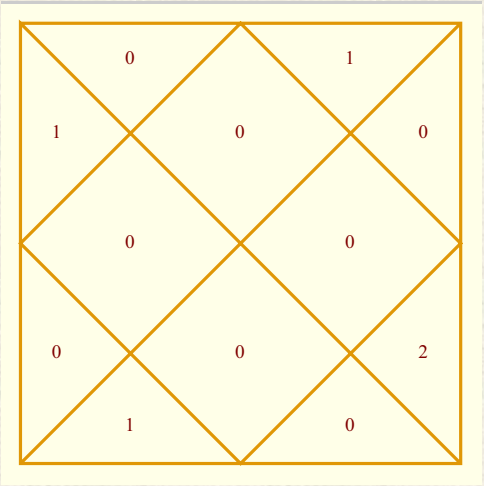

शनी अष्टकवर्ग 9

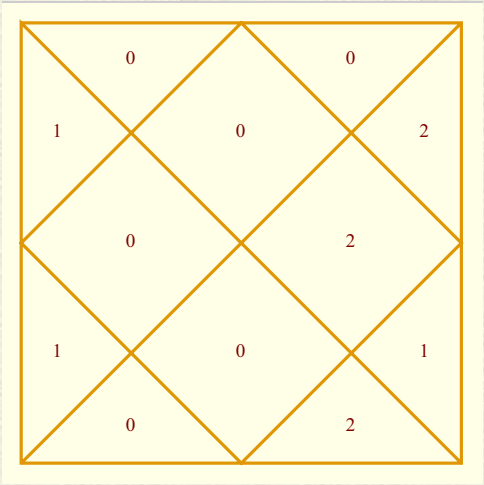

सर्व अष्टकवर्ग 73

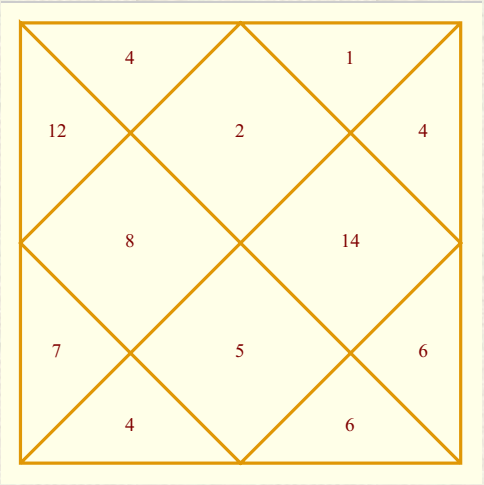

अष्टकवर्ग - एकाधिपत्य र्हास

चंद्र अष्टकवर्ग 8

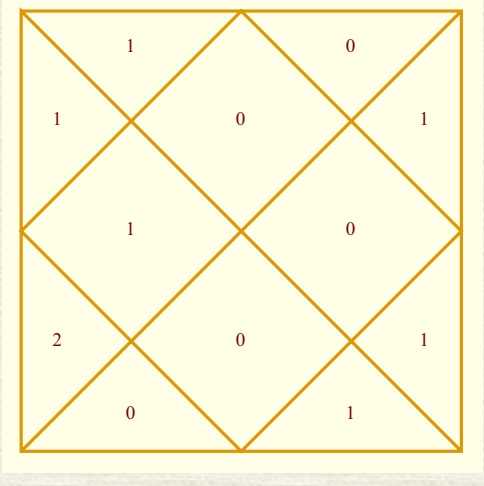

सूर्य अष्टकवर्ग 11

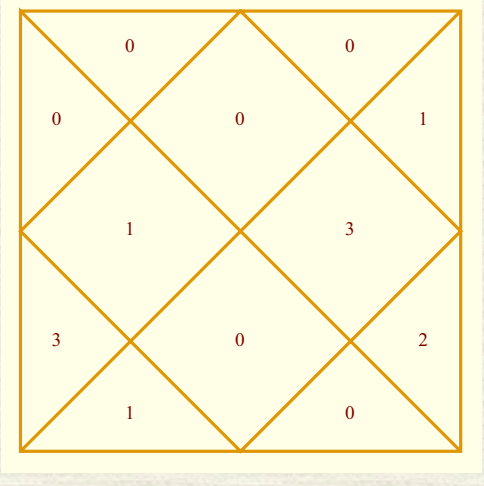

बुध अष्टकवर्ग 9

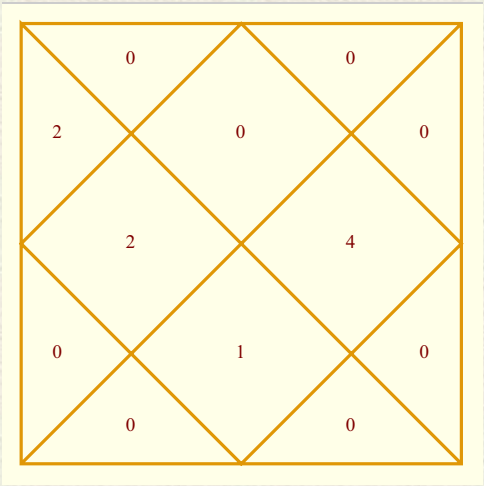

शुक्र अष्टकवर्ग 9

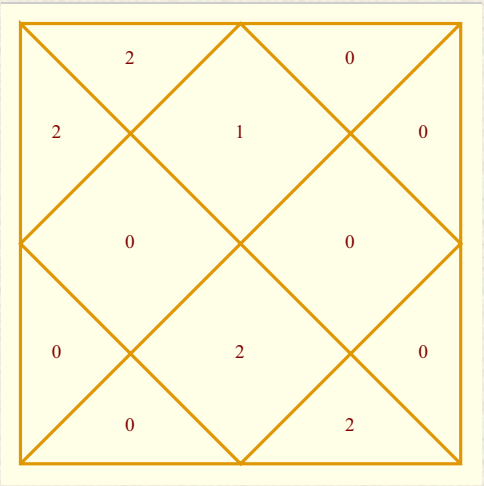

मंगल अष्टकवर्ग 15

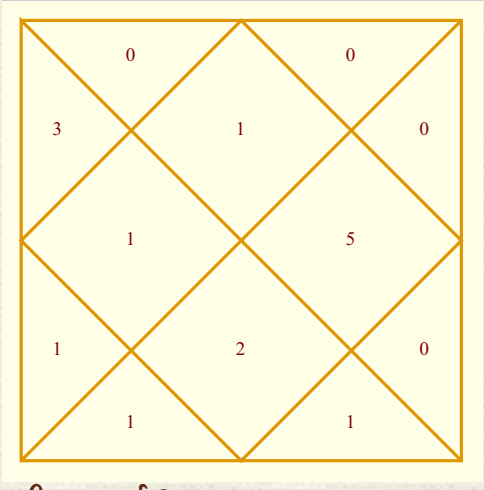

गुरू अष्टकवर्ग 5

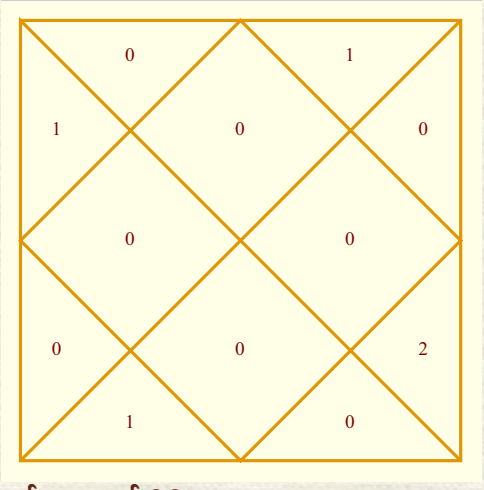

शनी अष्टकवर्ग 9

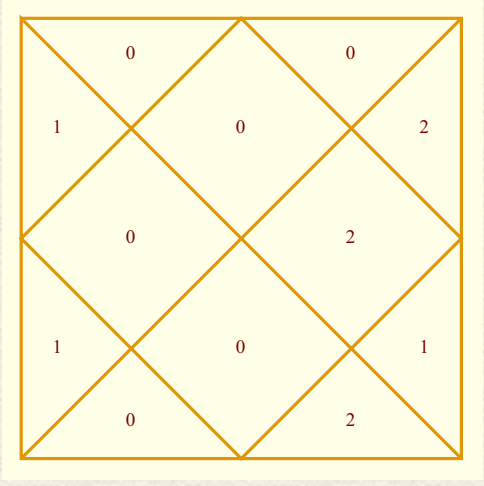

सर्व अष्टकवर्ग 66

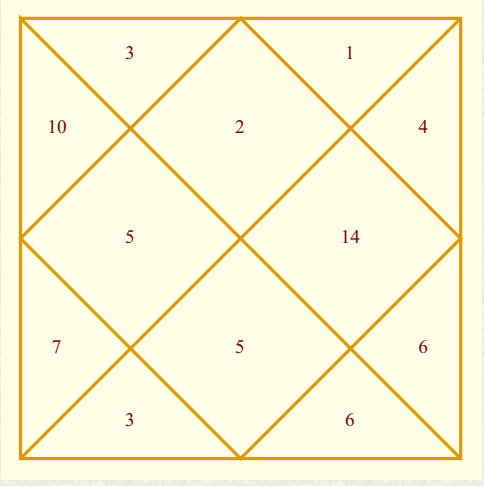

विंषोत्तरी दशा का संक्षिप्त विवरण

दशा आरम्भ की आयु (वर्ष: मास: दिवस)(YY:MM:DD)

चंद्र > 05:00:24 मंगल > 15:00:24 राहु > 22:00:24 गुरू > 40:00:24 शनी >56:00:24 बुध > 75:00:24 केतु > 92:00:25

दशा और भुक्ती का विवरण(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा का भोग्य काल= सूर्य 5 साल, 0 मास, 24 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्त्य
सूर्य	मंगल	11-11-2011	29-01-2012
सूर्य	राह्	29-01-2012	23-12-2012
सूर्य	गुरू	23-12-2012	11-10-2013
सूर्य	शनि	11-10-2013	23-09-2014
सूर्य	बुध	23-09-2014	30-07-2015
सूर्य	केतू	30-07-2015	05-12-2015
सूर्य	शुक्र	05-12-2015	05-12-2016
चन्द्र	चन्द्र	05-12-2016	05-10-2017
चन्द्र	मंगल	05-10-2017	06-05-2018
चन्द्र	राह्	06-05-2018	05-11-2019
चन्द्र	गुरू	05-11-2019	06-03-2021
चन्द्र	शनि	06-03-2021	05-10-2022
चन्द्र	बुध	05-10-2022	06-03-2024
चन्द्र	केतू	06-03-2024	05-10-2024
चन्द्र	शुक्र	05-10-2024	05-06-2026
चन्द्र	सूर्य	05-06-2026	05-12-2026
मंगल	मंगल	05-12-2026	03-05-2027
मंगल	राह्	03-05-2027	21-05-2028
मंगल	गुरू	21-05-2028	27-04-2029
मंगल	शनि	27-04-2029	05-06-2030
मंगल	बुध	05-06-2030	03-06-2031
मंगल	केतू	03-06-2031	30-10-2031
मंगल	शुक्र	30-10-2031	29-12-2032
मंगल	सूर्य	29-12-2032	06-05-2033
मंगल	चन्द्र	06-05-2033	05-12-2033
राह्	राह्	05-12-2033	17-08-2036
राह्	गुरू	17-08-2036	11-01-2039
राह्	शनि	11-01-2039	17-11-2041

राह्	बुध	17-11-2041	05-06-2044
राह्	केतू	05-06-2044	23-06-2045
राह्	शुक्र	23-06-2045	23-06-2048
राह्	सूर्य	23-06-2048	18-05-2049
राह्	चन्द्र	18-05-2049	17-11-2050
राह्	मंगल	17-11-2050	05-12-2051
गुरू	गुरू	05-12-2051	23-01-2054
गुरू	शनि	23-01-2054	05-08-2056
गुरू	बुध	05-08-2056	11-11-2058
गुरू	केतू	11-11-2058	18-10-2059
गुरू	शुक्र	18-10-2059	18-06-2062
गुरू	सूर्य	18-06-2062	06-04-2063
गुरू	चन्द्र	06-04-2063	05-08-2064
गुरू	मंगल	05-08-2064	12-07-2065
गुरू	राह्	12-07-2065	05-12-2067
शनि	शनि	05-12-2067	08-12-2070
शनि	बुध	08-12-2070	17-08-2073
शनि	केतू	17-08-2073	26-09-2074
शनि	शुक्र	26-09-2074	26-11-2077
शनि	सूर्य	26-11-2077	08-11-2078
शनि	चन्द्र	08-11-2078	08-06-2080
शनि	मंगल	08-06-2080	18-07-2081
शनि	राह्	18-07-2081	24-05-2084
शनि	गुरू	24-05-2084	05-12-2086
बुध	बुध	05-12-2086	03-05-2089
बुध	केतू	03-05-2089	30-04-2090
बुध	शुक्र	30-04-2090	28-02-2093
बुध	सूर्य	28-02-2093	04-01-2094
बुध	चन्द्र	04-01-2094	06-06-2095
बुध	मंगल	06-06-2095	02-06-2096
बुध	राह्	02-06-2096	20-12-2098

बुध	गुरू	20-12-2098	28-03-2101
बुध	शनि	28-03-2101	06-12-2103
केतू	केतू	06-12-2103	03-05-2104
केतू	शुक्र	03-05-2104	04-07-2105
केतू	सूर्य	04-07-2105	08-11-2105
केतू	चन्द्र	08-11-2105	09-06-2106
केतू	मंगल	09-06-2106	06-11-2106
केतू	राह्	06-11-2106	24-11-2107

नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

प्रत्यंतर दशा

दशा : चंद्र अपहार : बुध

1.बु	05-10-2022 >> 18-12-2022	2.के	18-12-2022 >> 17-01-2023
3.शु	17-01-2023 >> 13-04-2023	4.र	13-04-2023 >> 09-05-2023
5.चं	09-05-2023 >> 21-06-2023	6.मं	21-06-2023 >> 21-07-2023
7.रा	21-07-2023 >> 07-10-2023	8.गु	07-10-2023 >> 15-12-2023
9.श	15-12-2023>> 06-03-2024		

दशा : चंद्र अपहार : केतु

1.के	06-03-2024 >> 18-03-2024	2.शु	18-03-2024 >> 23-04-2024
3.र	23-04-2024 >> 03-05-2024	4.चं	03-05-2024 >> 21-05-2024
5.मं	21-05-2024 >> 02-06-2024	6.रा	02-06-2024 >> 04-07-2024
7.गु	04-07-2024 >> 02-08-2024	8.श	02-08-2024 >> 05-09-2024
9.बु	05-09-2024>> 05-10-2024		

दशा : चंद्र अपहार : शुक्र

1.शु	05-10-2024 >> 14-01-2025	2.र	14-01-2025 >> 14-02-2025
3.चं	14-02-2025 >> 05-04-2025	4.मं	05-04-2025 >> 11-05-2025
5.रा	11-05-2025 >> 10-08-2025	6.गु	10-08-2025 >> 30-10-2025
7.श	30-10-2025 >> 04-02-2026	8.बु	04-02-2026 >> 01-05-2026
9.के	01-05-2026>> 05-06-2026		

दशा : चंद्र अपहार : सूर्य

1.र	05-06-2026 >> 15-06-2026	2.चं	15-06-2026 >> 30-06-2026
3.मं	30-06-2026 >> 10-07-2026	4.रा	10-07-2026 >> 07-08-2026
5.गु	07-08-2026 >> 31-08-2026	6.श	31-08-2026 >> 29-09-2026
7.बु	29-09-2026 >> 25-10-2026	8.के	25-10-2026 >> 05-11-2026
9.शु	05-11-2026>> 05-12-2026		

दशा : मंगल अपहार : मंगल

1.मं	05-12-2026 >> 14-12-2026	2.रा	14-12-2026 >> 05-01-2027
3.गु	05-01-2027 >> 25-01-2027	4.श	25-01-2027 >> 18-02-2027
5.बु	18-02-2027 >> 11-03-2027	6.के	11-03-2027 >> 19-03-2027
7.शु	19-03-2027 >> 13-04-2027	8.र	13-04-2027 >> 21-04-2027
9.चं	21-04-2027>> 03-05-2027		

दशा : मंगल अपहार : राहु

1.रा	03-05-2027 >> 30-06-2027	2.गु	30-06-2027 >> 20-08-2027
3.श	20-08-2027 >> 20-10-2027	4.बु	20-10-2027 >> 13-12-2027
5.के	13-12-2027 >> 04-01-2028	6.शु	04-01-2028 >> 08-03-2028
7.र	08-03-2028 >> 27-03-2028	8.चं	27-03-2028 >> 28-04-2028
9.मं	28-04-2028>> 21-05-2028		

दशा : मंगल अपहार : गुरु

1.गु	21-05-2028 >> 05-07-2028	2.श	05-07-2028 >> 28-08-2028
3.बु	28-08-2028 >> 15-10-2028	4.के	15-10-2028 >> 04-11-2028
5.शु	04-11-2028 >> 31-12-2028	6.र	31-12-2028 >> 17-01-2029
7.चं	17-01-2029 >> 15-02-2029	8.मं	15-02-2029 >> 06-03-2029
9.रा	06-03-2029>> 27-04-2029		

दशा : मंगल अपहार : शनी

1.श	27-04-2029 >> 30-06-2029	2.बु	30-06-2029 >> 26-08-2029
3.के	26-08-2029 >> 19-09-2029	4.शु	19-09-2029 >> 25-11-2029
5.र	25-11-2029 >> 15-12-2029	6.चं	15-12-2029 >> 18-01-2030
7.मं	18-01-2030 >> 11-02-2030	8.रा	11-02-2030 >> 12-04-2030
9.गु	12-04-2030>> 05-06-2030		

दशा : मंगल अपहार : बुध

1.बु	05-06-2030 >> 27-07-2030	2.के	27-07-2030 >> 17-08-2030
3.शु	17-08-2030 >> 16-10-2030	4.र	16-10-2030 >> 03-11-2030
5.चं	03-11-2030 >> 04-12-2030	6.मं	04-12-2030 >> 25-12-2030
7.रा	25-12-2030 >> 17-02-2031	8.गु	17-02-2031 >> 06-04-2031
9.श	06-04-2031>> 03-06-2031		

दशा : मंगल अपहार : केतु

1.के	03-06-2031 >> 11-06-2031	2.शु	11-06-2031 >> 06-07-2031
3.र	06-07-2031 >> 14-07-2031	4.चं	14-07-2031 >> 26-07-2031
5.मं	26-07-2031 >> 04-08-2031	6.रा	04-08-2031 >> 26-08-2031
7.गु	26-08-2031 >> 15-09-2031	8.श	15-09-2031 >> 09-10-2031
9.बु	09-10-2031>> 30-10-2031		

दशा : मंगल अपहार : शुक्र

1.शु	30-10-2031 >> 09-01-2032	2.र	09-01-2032 >> 30-01-2032
3.चं	30-01-2032 >> 06-03-2032	4.मं	06-03-2032 >> 30-03-2032
5.रा	30-03-2032 >> 02-06-2032	6.गु	02-06-2032 >> 29-07-2032
7.श	29-07-2032 >> 05-10-2032	8.बु	05-10-2032 >> 04-12-2032
9.के	04-12-2032>> 29-12-2032		

दशा : मंगल अपहार : सूर्य

1.र	29-12-2032 >> 04-01-2033	2.चं	04-01-2033 >> 15-01-2033
3.मं	15-01-2033 >> 22-01-2033	4.रा	22-01-2033 >> 11-02-2033
5.गु	11-02-2033 >> 28-02-2033	6.श	28-02-2033 >> 20-03-2033
7.बु	20-03-2033 >> 07-04-2033	8.के	07-04-2033 >> 14-04-2033
9.शु	14-04-2033>> 06-05-2033		

दशा : मंगल अपहार : चंद्र

1.चं	06-05-2033 >> 24-05-2033	2.मं	24-05-2033 >> 05-06-2033
3.रा	05-06-2033 >> 07-07-2033	4.गु	07-07-2033 >> 04-08-2033
5.श	04-08-2033 >> 07-09-2033	6.बु	07-09-2033 >> 07-10-2033
7.के	07-10-2033 >> 20-10-2033	8.शु	20-10-2033 >> 24-11-2033
9.र	24-11-2033>> 05-12-2033		

दशा : राहु अपहार : राहु

1.रा	05-12-2033 >> 02-05-2034	2.गु	02-05-2034 >> 10-09-2034
3.श	10-09-2034 >> 13-02-2035	4.बु	13-02-2035 >> 03-07-2035
5.के	03-07-2035 >> 30-08-2035	6.शु	30-08-2035 >> 10-02-2036
7.र	10-02-2036 >> 30-03-2036	8.चं	30-03-2036 >> 20-06-2036
9.मं	20-06-2036>> 17-08-2036		

दशा : राहु अपहार : गुरू

1.गु	17-08-2036 >> 12-12-2036	2.श	12-12-2036 >> 30-04-2037
3.बु	30-04-2037 >> 01-09-2037	4.के	01-09-2037 >> 22-10-2037
5.शु	22-10-2037 >> 17-03-2038	6.र	17-03-2038 >> 30-04-2038
7.चं	30-04-2038 >> 12-07-2038	8.मं	12-07-2038 >> 01-09-2038
9.रा	01-09-2038>> 11-01-2039		

दशा : राहु अपहार : शनी

1.श	11-01-2039 >> 24-06-2039	2.बु	24-06-2039 >> 19-11-2039
3.के	19-11-2039 >> 19-01-2040	4.शु	19-01-2040 >> 10-07-2040
5.र	10-07-2040 >> 31-08-2040	6.चं	31-08-2040 >> 26-11-2040
7.मं	26-11-2040 >> 26-01-2041	8.रा	26-01-2041 >> 01-07-2041
9.गु	01-07-2041>> 17-11-2041		

दशा : राहु अपहार : बुध

1.बु	17-11-2041 >> 29-03-2042	2.के	29-03-2042 >> 22-05-2042
3.शु	22-05-2042 >> 24-10-2042	4.र	24-10-2042 >> 10-12-2042
5.चं	10-12-2042 >> 25-02-2043	6.मं	25-02-2043 >> 21-04-2043
7.रा	21-04-2043 >> 07-09-2043	8.गु	07-09-2043 >> 09-01-2044
9.श	09-01-2044>> 05-06-2044		

दशा : राहु अपहार : केतु

1.के	05-06-2044 >> 27-06-2044	2.शु	27-06-2044 >> 30-08-2044
3.र	30-08-2044 >> 18-09-2044	4.चं	18-09-2044 >> 20-10-2044
5.मं	20-10-2044 >> 12-11-2044	6.रा	12-11-2044 >> 08-01-2045
7.गु	08-01-2045 >> 28-02-2045	8.श	28-02-2045 >> 30-04-2045
9.बु	30-04-2045>> 23-06-2045		

दशा : राहु अपहार : शुक्र

1.शु	23-06-2045 >> 23-12-2045	2.र	23-12-2045 >> 16-02-2046
3.चं	16-02-2046 >> 18-05-2046	4.मं	18-05-2046 >> 21-07-2046
5.रा	21-07-2046 >> 01-01-2047	6.गु	01-01-2047 >> 28-05-2047
7.श	28-05-2047 >> 17-11-2047	8.बु	17-11-2047 >> 20-04-2048
9.के	20-04-2048>> 23-06-2048		

दशा : राहु अपहार : सूर्य

1.र	23-06-2048 >> 10-07-2048	2.चं	10-07-2048 >> 06-08-2048
3.मं	06-08-2048 >> 25-08-2048	4.रा	25-08-2048 >> 14-10-2048
5.गु	14-10-2048 >> 26-11-2048	6.श	26-11-2048 >> 17-01-2049
7.बु	17-01-2049 >> 05-03-2049	8.के	05-03-2049 >> 24-03-2049
9.शु	24-03-2049>> 18-05-2049		

ग्रहों के स्थिती का विश्लेषण

भावों के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	:	गुरू
दूसरा	,,	(पनफर)	:	शनी
तिसरा	,,	(अपोक्लीम)	:	शनी
चौथा	,,	(केन्द्र)	:	गुरू
पांचवा	,,	(त्रिकोण)	:	मंगल
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीम)	:	शुक्र
सातवाँ	,,	(केन्द्र)	:	बुध
आठवाँ	,,	(पनफर)	:	चंद्र
नवम	,,	(त्रिकोण)	:	सूर्य
दशम	,,	(केन्द्र)	:	बुध
ग्यारहवां	,,	(पनफर)	:	शुक्र
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीम)	:	मंगल

ग्रहों का योग

चंद्र	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	गुरू
बुध	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	शुक्र,राहु
शुक्र	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	बुध,राहु
गुरू	ग्रहों की परस्पर दृष्टी	चंद्र

ग्रहों की ग्रहों पर दृष्टि

चंद्र	दृष्टी	सूर्य
सूर्य	दृष्टी	चंद्र,गुरू
बुध	दृष्टी	केतु
शुक्र	दृष्टी	केतु
मंगल	दृष्टी	बुध,शुक्र,राहु
गुरू	दृष्टी	सूर्य,मंगल,लग्न
शनी	दृष्टी	बुध,शुक्र,राहु

ग्रहों की भावों पर दृष्टि

चंद्र	दृष्टी	ग्यारहवां
सूर्य	दृष्टी	पांचवा
बुध	दृष्टी	छठ्ठा
शुक्र	दृष्टी	छठ्ठा
मंगल	दृष्टी	तिसरा,चौथा,बारहवाँ
गुरु	दृष्टी	प्रथम,नवम,ग्यारहवां
शनी	दृष्टी	चौथा,सातवाँ,बारहवाँ

शुभ और अशुभ ग्रह

गुरु, शुक्र और चन्द्र नैसर्गिक पक्षबल के अनुसार शुभ फलदायी होते हैं।.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल प्राप्त रहता है।

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल से युक्त है और वह शुभ फलदायी भी है।

बुध जब क्रूर (अशुभ) ग्रहों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अशुभ और उद्वेग उत्पन्न करने वाला ग्रह हो जाता है।

लेकिन आपकी कुंडली में बुध अशुभ ग्रहों के प्रभाव में नहीं है।

चंद्र	शुभ
सूर्य	अशुभ
बुध	शुभ
शुक्र	शुभ
मंगल	अशुभ
गुरु	शुभ
शनी	अशुभ
राहु	अशुभ
केतु	अशुभ

अशुभ और शुभ फलों का ग्रहों के भाव अधिपत्य के आधार पर निरूपण

ग्रहों के शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडली में उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर किया जाता है पर फलादेश का मुख्य आधार उनका कुंडली के भावों के अधिपत्य के अनुसार होता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा शुभ माना जाता है। इन्हें त्रिकोण भी कहा जाता है।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह भी यदि चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदायी और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ ग्रह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, स्थान के स्वामी सम या शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी ग्रह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को प्राप्त करते हैं। उनके भावानुसार प्रभाव को सूक्ष्मता से देखना पड़ता है।

कुछ ज्योतिषों का मानना है कि आठवें स्थान का स्वामी सदा अमंगल और अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान के स्वामी के विषय में फलादेश उसके कुंडली में अन्य स्थान को भी विचार में लेकर करना चाहिए।

ग्रह	स्वामीत्व	स्वभाव
चंद्र	8	सम
सूर्य	9	शुभ
बुध	7 10	अशुभ
शुक्र	6 11	अशुभ
मंगल	5 12	शुभ
गुरु	1 4	सम
शनी	2 3	अशुभ

नैसर्गिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम
र	मित्र	...	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बु	शत्रु	मित्र	...	मित्र	सम	सम	सम
शु	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम	सम	मित्र
मं	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...	मित्र	सम
गु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम
श	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...

तात्कालिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बु	शत्रु	मित्र	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शु	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	मित्र	शत्रु	मित्र
मं	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र
गु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु
श	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...

पंचदा मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	सम	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
र	सम	...	मित्र	सम	अधि मित्र	सम	सम
बु	अधि शत्रू	अधि मित्र	...	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शु	अधि शत्रू	सम	सम	...	मित्र	शत्रु	अधि मित्र
मं	सम	अधि मित्र	सम	मित्र	...	सम	मित्र
गु	सम	सम	अधि शत्रू	अधि शत्रू	सम	...	शत्रु
श	अधि शत्रू	सम	अधि मित्र	अधि मित्र	सम	शत्रु	...

षष्टीयांश में के दृष्टीबल कोष्टक

देखने वाला ग्रह दृष्य ग्रह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
चंद्र	.	51.42	50.97	50.87	41.37	.	1.62
बुध	23.87	.	.	.	20.40	7.29	.
शुक्र	23.50	.	.	.	20.49	7.48	.
गुरु	.	52.53	41.35	41.26	31.76	.	40.07
शुभ बल	47.37	103.95	92.32	92.13	114.02	14.77	41.69
अशुभ दृष्टी							
सूर्य	-57.85	.	.	.	-9.22	-30.13	.
मंगल	-18.63	-33.45	-39.60	-39.51	.	-28.24	-11.77
			-15.00	-15.00			
शनी	-45.40	.	-8.63	-8.72	.	-55.02	.
अशुभ शक्ती	-121.88	-33.45	-63.23	-63.23	-9.22	-113.39	-11.77
दृष्टी पींड	-74.51	70.50	29.09	28.90	104.80	-98.62	29.92
द्रिक बल	-18.63	17.63	7.27	7.23	26.20	-24.65	7.48

षड्बल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल							
	58.58	4.82	39.40	16.66	2.67	31.50	53.18
सप्तवर्गीय बल							
	52.50	67.50	78.75	71.25	120.00	37.51	112.50
ओजयुग्म राशी बल							
	0	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00	0
केन्द्र बल							
	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	30.00	60.00
द्रेश्काण बल							
	15.00	0	15.00	0	15.00	15.00	0
संयुक्तस्थान बल							

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
	156.08	117.32	163.15	117.91	167.67	144.01	225.68
संयुक्त दिगबल							
	48.06	49.49	47.96	18.02	44.36	24.47	27.79
नतोन्नत बल							
	5.08	54.92	60.00	54.92	5.08	54.92	5.08
पक्षबल							
	117.14	1.43	58.57	58.57	1.43	58.57	1.43
त्रिभाग बल							
	0	60.00	0	0	0	60.00	0
अब्द बल							
	0	0	0	0	0	15.00	0
मास बल							
	30.00	0	0	0	0	0	0
वार बल							
	0	0	0	45.00	0	0	0
होरा बल							
	0	0	0	0	0	60.00	0
आयन बल							
	6.58	15.98	58.05	1.91	44.63	46.12	41.60
युद्ध बल							
	0	0	9.14	-9.14	0	0	0
संयुक्त काल बल							
	158.80	132.33	185.76	151.26	51.14	294.61	48.11
संयुक्त चेष्टाबल							
	0	0	37.29	15.03	34.26	54.86	10.62
संयुक्त नैसर्गिक बल							
	51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल							
	-18.63	17.63	7.27	7.23	26.20	-24.65	7.48
संपूर्ण षड्बल							
	395.74	376.77	467.13	352.30	340.77	527.58	328.25

षडबल संक्षिप्त सारिणी

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
395.74	376.77	467.13	352.30	340.77	527.58	328.25
संपूर्ण शडबल						
6.60	6.28	7.79	5.87	5.68	8.79	5.47
मौलीक आवश्यकता						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.10	1.26	1.11	1.07	1.14	1.35	1.09
संबन्धी स्थान						
5	2	4	7	3	1	6

इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
58.57	8.17	38.33	15.82	9.56	41.57	23.76
कष्टफल						
1.43	50.47	21.63	44.15	38.41	12.10	18.35

षष्टीयांश में के भाव दृष्टीबल कोष्टक

बुध ग्रह फल उसके साथ स्थित ग्रह के स्वभाव से सुनिश्चित किया जाता है।

देखने वाला ग्रह भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चंद्र											
8.23	4.47	0.73	.	.	.	3.03	9.80	8.23	1.45	12.10	11.98
बुध											
3.06	21.13	41.94	23.87	12.25	56.94	41.94	26.94	11.94	.	.	.
शुक्र											
0.74	5.24	10.51	6.02	2.97	14.26	10.51	6.76	3.01	.	.	.
गुरु											
23.29	8.29	.	.	.	6.71	28.42	38.29	16.58	26.84	53.29	38.29
30.00								30.00			
शुभ बल											
65.32	39.13	53.18	29.89	15.22	77.91	83.90	81.79	69.76	28.29	65.39	50.27

अशुभ दृष्टी

सूर्य											
-3.56	-10.87	-7.69	-0.38	-14.24	-11.44	-7.69	-3.94	-0.19	.	.	.
मंगल											
-3.27	-8.47	-12.89	-9.14	-5.39	-1.64	.	.	.	-2.12	-7.98	-9.14
			-3.75								-3.75
शनी											
-9.60	-8.33	-1.66	-11.69	-12.08	-8.33	-4.58	-0.83	.	.	.	-2.92
-11.25							-11.25				
अशुभ शक्ती											
-27.68	-27.67	-22.24	-24.96	-31.71	-21.41	-12.27	-16.02	-0.19	-2.12	-7.98	-15.81

दृष्टी पींड / द्रिक बल

37.64	11.46	30.94	4.93	-16.49	56.50	71.63	65.77	69.57	26.17	57.41	34.46

भावबल की तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीपती का बल											
527.58	328.25	328.25	527.58	340.77	352.30	467.13	395.74	376.77	467.13	352.30	340.77
भाव दिग्बल											
30.00	40.00	40.00	60.00	10.00	20.00	0	20.00	50.00	30.00	40.00	10.00
भावदृष्टीबल											
37.64	11.46	30.94	4.93	-16.49	56.50	71.63	65.77	69.57	26.17	57.41	34.46
संपूर्ण भावबल											
595.22	379.71	399.19	592.51	334.28	428.80	538.76	481.51	496.34	523.30	449.71	385.23
भावबल के रूप											
9.92	6.33	6.65	9.88	5.57	7.15	8.98	8.03	8.27	8.72	7.50	6.42
संबन्धी स्थान											
1	11	9	2	12	8	3	6	5	4	7	10

अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य से बारह अंश पर चन्द्र, सत्रह अंश पर मंगल, तेरह अंश पर बुध, ग्यारह अंश से गुरू, नौ अंश पर शुक्र और पंद्रह अंश पर शनी अस्तंगत माना जाता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रह अस्त नही है।

ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारायें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

ग्रहयुद्ध में बुध ग्रह की विजय हुई है।

ग्रहयुद्ध में शुक्र ग्रह की पराजय हुई है।

अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

ग्रह	उच्च राशि में/ नीच राशि में	अन्स्तंगत	ग्रहयुद्ध	वक्री	बालादि अवस्था
चं					मित्रावस्था
र	नीच का				मित्रावस्था
बु			विजयी		युवावस्था
शु			हारनेवाला		युवावस्था
मं					कुमारावस्था
गु				वक्री	कुमारावस्था
श					बालावस्था

कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता हैं। कुछ योग ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती हैं।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया हैं।

नीचभंगराज योग

लक्षण:
सूर्य क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है।
दुर्बल राशी में जो ग्रह आनन्दपूर्ण है, लग्न से केन्द्र में उपस्थित है।

आप अति भाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राजयोग

लक्षण:
प्रथम और नवम भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है।
चौथा और नवम भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है।
इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई देती है।

कुंडली में वृहत राजयोग उदित है,

गज़केसरी योग

लक्षण:
चन्द्र एवं गुरू का केन्द्र योग

बृहस्पति चन्द्र से केन्द्र स्थान पर होने से गजकेसरी योग होता है। ज्योतिशास्त्र के अनुसार केसरीयोग में जन्म पानेवाले व्यक्ति भाग्यवान माने जाते हैं। वे धनी, ऐश्वर्यवान, विजयी होते हैं। केसरी योग अन्य बुरे योगों का प्रभाव, जैसे केमद्रुम, शटक आदि को नष्ट करता है। आप सामान्यत: एक दीर्घ सफल जीवन प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन दृढ होने पर भी कभी-कभी चंचल भी होता है। एक बार लिये गये निर्णय को बदलना आपके लिए कठिन है। संपत्ति, कार्यसिद्धि, सफलता और प्रगति सुलभ प्रमाण में प्राप्त होगी। ऐश्वर्यपूर्ण दीर्घ आयु का योग है। स्वयं बुद्धि से हर समस्या का समाधान निकालने में निपुण हैं।

सदसन्चार योग

लक्षण:
लग्नाधीपती चर राशी में हो।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

सुभावेसी योग

लक्षण:
चंद्रमा के अलावा लाभदायक ग्रह सूर्य से दूसरा अधिग्रहण करता है।

यह योग आपको जानकार बनाएगा। आपके पास बातचीत का एक विशिष्ट तरीका होगा। इसकी सभी के द्वारा की जाएगी। आपको एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जाएगा। अन्य लोग एक भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में आपकी प्रशंसा करेंगे। आपके पुरूषत्वो के गुणों की अधिक प्रशंसा की जाएगी। आप एक उत्कृष्ट पुरूष के रूप में जाने जाएँगे।

महाभाग्य योग

लक्षण:
जब जन्म दिन के समय के दौरान हो जबकि सूर्य, चंद्रमा और लग्न विषम राशियों में हों।

आपका व्यक्तित्व अच्छा रहेगा, आप दुसरो की खुशहाली का कारन बनेंगे, आप उदार, त्यागी, प्रसिद्ध, नेता रहेंगे और बुढापा अच्छेसें जियेंगे।

पासा योग

लक्षण:
सभी ग्रह कोई पाँच राशियाँ अधिग्रहित करते हैं।

यह योग धन और समृद्धि को इंगित कर रहा है। आपके पास अधीनस्थ लोग होंगे। आपके मित्र आप पर आश्रित होंगे। आप एक बहुत ही मित्रवत पुरूष के रूप में जाने जाएँगे। आपका स्वभाव कई लोगों को आकर्षित करेगा।

हर्ष योग

लक्षण:

छठवें घर का भगवान छठवाँ, आठवाँ अथवा बारहवाँ हर अधिग्रहित करता है।

यह योग विपरीत राजयोग के अंतर्गत आता है। इस योग में आपके जीवन में नकारात्मक प्रभावों को निकालने की शक्ति होती है। आपका अच्छा स्वास्थ्य होगा। आप एक समृद्ध पुरूष होंगे। आप पवित्र कार्यों में रुचि लेंगे।

उत्तम गृह योग

लक्षण:
चौथे घर का भगवान किसी केंद्र अथवा त्रिकोण में लाभकारी है।

यह एक सुंदर घर के लिए एक बहुत मजबूत योग है। आप स्वयं के घर का निर्माण करने के लिए समर्थन प्राप्त करेंगे। यह आपको एक खुश पुरूष बनाएगा। दूसरे आपके निवास के लिए प्रशंसा करेंगे।

मातृ स्नेह योग

लक्षण:
प्रथम और चौथे घरों में एक उभयनिष्ठ भगवान है।

यह आपके लिए एक बहुत सुखदायक योग है। यह योग आपकी माँ के साथ एक महान संबंध को दर्शाता है। एक पुरूष के रूप में, आप अपनी माँ के आशीर्वाद से धन्य हो जाएँगे। यह आपके जीवन में मूल्य को जोड़ेगा।

सत्कालत्र योग

लक्षण:
सातवें का भगवान अथवा शुक्र जुड़ते हैं अथवा बृहस्पति या बुध द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।

यह योग प्रदर्शित करता है कि आप एक खुश पुरूष होंगे और आप एक अच्छी पत्नि प्राप्त करेंगे। आपका पति सच्चा एवं पवित्र होगा तथा यह आपके जीवन में मूल्य जोड़ेगा।

द्विग्रह योग

लक्षण:
दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है।
चंद्र,गुरू, पांचवा भाव में है।

दूसरों का प्रभाव आपको अस्थिर और चंचल बनाएगा। फिर भी आप प्यार सम्बंधित विषयों में दृढ़ रहेंगे। आपके आधिकारिक व्यवहार से अन्य लोग भयभीत होंगे। आपका पवित्र और उदार स्वाभाव तथा न्याययुक्त वाक्यों का प्रयोग आदि गुण स्थिर दोस्ती बनाने के लिए सहायक होंगे। आप अपने बुद्धि और शक्ति से धन कमाने की कोशिश करेंगे और परिवार की उत्तरदायित्व उठाने में हमेशा तैयार होंगे।

द्विग्रह योग

लक्षण:
दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है।
बुध,शुक्र, बारहवाँ भाव में है।

धर्म और धार्मिक विषयों में आपकी विशिष्ट दिलचस्पी होगी। आप हमेशा शान्त रहने वाले व्यक्ति हैं। आप संगीत और अन्य कला का आनन्द लेने के लिए समय बिताएंगे। आप विनीत होकर बाते करने का हमेशा ध्यान रखते हैं। आपको सम्पति और समृद्धि प्राप्त होगी।

भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं ।

व्यक्तित्व, शारीरीक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता हैं। यह लग्न कहलाता है।

लग्न स्थान में धनुराशि होने से स्थायी आमदनी प्राप्त करने योग्य उद्योग या नौकरी पसंद करनेवाले व्यक्ति हैं। आप सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं। निकट के मित्रों की सलाह को भी आप स्वीकारते नहीं। आपके पास किसी के सिफारिश पत्र को लेकर कोई आ जाये तो उसको निराशा के अलावा कुछ न मिलेगा। करकौशल्य कार्यों में अभिरुचि लेनेवाले हैं। आप सरकारी नौकरी, खेती और विदेश गमन से होनेवाले कार्यों के साथ जुड़े रह सकते हैं। इन कार्यों से जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। समुद्र के माध्यम से होने वाले सफर के निमित्त या जिस व्यवसाय में जल अधिक मात्रा में इस्तेमाल किया जाता हो, उनके माध्यम से सफलता और उन्नति प्राप्त होगी। आप अति तेज़ चलने के आदि हैं। मंदिर और देवालय के कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाले हैं। स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र परिधान के शौकीन हैं। धनु लग्न में उत्पन्न व्यक्ति विद्वान, कानून विद्, मज़बूत इरादेवाला, रूपवान, कलाप्रेमी, जनप्रिय और उत्तम प्रशासक होता है। 'प्राज्ञचराज्ञ: परिसेवनज्ञ: सत्यप्रतिज्ञ: सुतरां मनोज्ञ:..'

मन को संतोष प्रदान करनेवाली संतान की प्राप्ति होगी। ईश्वर कृपा आप पर सदा बरसती रहेगी। जन्मकुंडली में सातवें स्थान पर रही हुई मिथुनराशि, विवाह के बाद भाग्योदय की ओर खींच लेगी। जीवनसाथी समर्थ, सौन्दर्यवान और विनयशील होंगे। विदेशवास के समय शत्रुता न बढ़े इस बात को सदा ध्यान में रखना लाभदायी होगा। आप असाधारण सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं। असाधारण स्थिति में धन लाभ होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। विनयशील व्यवहार, सात्विक नि:स्वार्थ, मनोभाव इत्यादि आपके उन्नति के कारण बनेंगे।

निज संस्कृति व धर्म के प्रचार में रूचि होगी। 22से 24 वर्ष के बीच जीवन में स्थिरता का शुभारंभ हो सकता है।

बारहवें स्थान पर वृश्चिक राशि के होने के कारण आप अनुकरण करने के स्वभाव के आदि हैं। नीच मनोवृत्ति के लोगों से संबन्ध विच्छेद करना ही आपके लिए उचित होगा। उनसे बचते रहना आपके लिए अनिवार्य है। दुष्ट लोगों से बचते रहना आवश्यक हैं। सजगता और जागृति सलामती के चिन्ह हैं।

जीवन के पूर्वार्धकाल में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। जीवन के उत्तरार्धकाल में आर्थिक स्थिति में उन्नति होने की संभावना है। अप्रतीक्षित मार्ग से अचानक धन की प्राप्ति होगी। अन्य लोगों के लिए आपकी उन्नति एक चर्चा का विषय बन जायेगा। आपके विवाह के बाद असाधारण मार्ग से धन की प्राप्ति होगी। आपको वारिस की हैसियत से संपत्ति प्राप्त होगी। इस विषय में कोर्ट और कचेहरी के चक्कर काटने पड़ेंगे। बड़ी रकम हाथ आने की उम्मीद रखते हैं। सट्टे बाज़ारी से आप यदि मुक्त रहेंगे तो आपकी बचत योजना में सफलता प्राप्त होगी। जीवन का 17,26,29,35,38,42 और 45 वाँ वर्ष अति महत्वपूर्ण रहेगा।

लग्नाधिपति पाँचवे स्थान पर हैं। आप बच्चों के कारण सदा चिंतित रहने के आदि हैं। प्रतिकूल स्थिति में क्रोध को नियंत्रण के आधीन रखना कठिन होगा। उच्च अधिकारियों या बडों से पूरा सहकार प्राप्त होता रहेगा। आप उनके स्नेह और वात्सल्य के पात्र बनेंगे। यह शास्त्र प्रमाण पूरी तरह लागू होगा। लग्नो पञ्चमे मानी सुत सौख्यं च मध्यमम्॥ प्रथमापत्य नाशच क्रोधी राजप्रवेशक:॥

आपके जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी स्वास्थ्य सम्बधी संपन्नता, विचार शक्ति और शारीरिक बनावट को सूचित करता है।

गुरू लग्न से प्रभावित है। आप हमेशा अच्छे और साफ कपडे पहनना चाहते हैं और बोली में अच्छे वाक्यों का प्रयोग करना चाहते हैं।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती है। इसे धन स्थान कहते हैं।

दूसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से आप एक विद्यासंपन्न व्यक्ति होंगे। आपको समाज के बीच मान्यता प्राप्त होगी। स्वयं ही उल्लासित बनने युक्त अनेक विनोद युक्त कार्य करने का योग है। संपूर्ण संतोष प्राप्ति ही जीवन का ध्येय बनेगा। 'कामी मानी च पण्डित: बहुदार धनैर्युक्त: सुतहीनोडपि' कामी, अभिमानी, विद्वान, बहादुर या द्विभार्यवाले धनवान पर अल्प पुत्रवाले होना संभव है।

भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता हैं।

तीसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से अनेक सुख और भाग्योदय का योग है। स्वपरिश्रम और पुरूषार्थ आपकी सफलता का साधन होगा। आपको अधर्मी और विकार युक्त मनोदशा वाले लोगों के साथ रहकर कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। संतान, बन्धु और मित्र वर्ग के कारण थोड़ा मानसिक तनाव होगा। पर अन्तत:बन्धु वर्ग के कारण ही पद व प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी पांचवे भाव में स्थित है। आप प्रयत्नशील स्वभाव के पुरूष हैं। आपकी स्वावलंबी और क्रियाशीलता की आदत से सफलता सदा आपका साथ देगी । आपकी परिचय में आनेवाले सभी लोग आपसे प्यार करेंगे। वाहन का योग उत्तम है। आप कुलीन माता के पुत्र हैं। विद्या संपन्नता और धर्मनिष्ठता भरपूर होगी।

चौथे भाव का स्वामी गुरू (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्मगुरू सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

चन्द्र पाँचवें स्थान पर है। आप विज्ञान रसिक व्यक्ति हैं। आप अपना कारोबार चलाने में निपुण है। हर कार्य में आपकी स्थिरता और एकाग्रता यथायोग्य उभर उठेगी। चंचल स्वभाव के कारण, निर्णय में शीघ्रता हानिकारक हो सकती है।

गुरू पाँचवें स्थान पर रहा है। आपको ऐतिहासिक घटनाओं में, बच्चों में, सट्टेबाज़ारी में और जुए में अभिरूचि रहेगी। अपनी कारोबारी में सफलता हासिल होगी। समतापूर्ण स्थिति सरलता से सिद्ध कर सकते हैं।

पाँचवां भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने के कारण साहित्य में, साहित्य रचने के कार्य में और समाचार पत्र आदि के प्रकाशन कार्य में अभिरूचि रखने वाले व्यक्ति हैं। संतान के माध्यम से और लेखन के कार्य से अतुलित कीर्ति अर्जित कर सकेंगे।

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरू था शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

रोग, शत्रु , कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

केतु छठ्ठे स्थान पर रहा है। आपके कोई शत्रु ही नहीं होंगे। संपूर्ण शाँतिमय जीवन बितानेवाले व्यक्ति होंगे। इस कारण से आप सद्भागी हैं।

छठे भावाधिपति के बारहवें स्थान पर रहने से धन के व्यय की संभावनायें दिखाई देती हैं। अन्य के प्रति क्रूर व्यवहार करना आपके लिए साधारण कृत्य है। दूसरों को दु:ख देना आपके लिए साधारण है। स्वयं सुख के मिले हुए सभी संदर्भ का पूरा उपयोग करने वाले हैं। द्वेष, रोग और चरित्र विषय में सदा सतर्क रहने की आवश्यकता है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति बारहवें स्थान पर है। महिलाओं के प्रति विश्वासपूर्ण नैतिक व्यवहार का पालन करनेवाले पुरुष है। स्त्रियों से आवश्यकता से ज़्यादा मिलने-जुलने के कारण आलोचना के पात्र होने की संभावना है। इस कारण सजग रहना लाभदायी होगा। अपने दांपत्यजीवन को सुखमय बनाने के लिए और गृहनायक की ज़िम्मेदारी ठीक प्रकार से निभाने के लिए ज़्यादा पुरुषार्थ की आवश्यकता रहेगी। कर्तव्यनिष्ठा पर बड़ा ज़ोर देनेवाले व्यक्ति होते हुए भी स्वयं का व्यवसाय ही ऐसा रहेगा जिससे समय का परिपालन ठीक प्रकार निभा नहीं पायेंगे। इस कारण परिवार के बीच असंतोष उत्पन्न होगा। आप स्वाभिमानी होने पर पिता के नाम को रोशन कर पायेंगे। अपनी संतानों के शिक्षाकार्य और अभ्यासकार्य के लिए आप समय नहीं दे पायेंगे।

सातवें स्थान का भावाधिपति पापयुक्त गृहों के निकट रहने से आपको सतर्क रहना पड़ेगा। सफर के वक्त ज़्यादा सावधान रहना योग्य होगा। चरित्र की उच्चता को बनाये रखना आपका परम कर्तव्य होना चाहिए।

उत्तर दिशा से श्रेष्ठ जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

सूर्य गुरु के अधीन रहा है। इस कारण आपकी पत्नी आत्मीय स्वभाव की ओर परिपक्व विचारों की शालीन महिला होगी। जीवन में योग्य मार्गदर्शन मिलता रहेगा और इस कारण आप भाग्यवान समझे जायेंगे।

चन्द्र गुरु के अधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पत्नी के साथ छोटे-मोटे कारणों को लेकर झगड़ा होता रहेगा। इस झगड़े को बड़ा स्वरूप न देना ही बुद्धिमानी माना जायेगा। किसी से परंपरागत संबंधों से भिन्न प्रकार के संबन्ध होने की सभावना होगी। पत्नी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

दीर्घायु , कठिनाईयां

आठवें भाव से दीर्घायु, वैधक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवाँ भावाधिपति पाँचवें स्थान पर रहने से आप की संपत्ति की उन्नति जारी रहेगी। आप लंबी आयु के भोक्ता हैं। संतान की अल्पता रहेगी। आप की असीम कार्यशक्ति के अनुसार मान्यता प्राप्त नहीं होगी। शिक्षा प्राप्ति और प्रबन्ध लेखन में अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

लग्नेश के साथ अष्टमेश की उपस्थिति दीर्घायु कारक है।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववा भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आप श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। शक्तिशाली और अधिकार संपन्न मित्र प्राप्त होंगे। श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करने का योग है। धर्म के प्रति आस्था और धन की प्रचुरता के साथ-साथ पुण्य कर्मों से प्रसिद्धि भी मिलेगी।

नौवे भाव में मंगल की उपस्थिति होने से आप स्वतन्त्र विचार के हैं और साथ ही साथ अधिकार के रक्षक भी हैं। यह होते हुए भी आप अपने माँ-बाप के प्रति अविनयपूर्ण व्यवहार करने वाले हैं। फिर भी जनसमुदाय के बीच दानशील और उदारतापूर्ण व्यवहार केलिए जाने जायेंगे। 'हिंसा विधाने मनस: प्रवृत्ति.....' हिंसा व क्रूरता से परहेज न होगा।

नवमा भावाधिपति दुर्बल होने के कारण अनेक प्रतीक्षित सुखद अनुभवों से वंचित रहना पड़ेगा।

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अत: अनेक प्रगति का कारण बन सकते हैं। भाग्येश आपको अनिष्टों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होगी।

नवमें भाव में स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति सुख संपत्ति की प्राप्ती करानेवाला है। अनेक अनिष्ट कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवां भाव व्यापार, श्रेणी या पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल या गति और अधिकार को सूचित करता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवें भाव से काम (उद्योग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेशों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका, व्यवसाय या पेशा आदि का निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष संबंधित व्यवसाय के अन्तर्गत दसवें भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, ग्रह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में है। बृहत पराशर होरा के श्लोकों के अनुसार आपका सरकारी कामकाज में धननष्ट होगा । आपको शत्रुभय बना रहेगा। आप चतुर और प्रतिभाशाली हैं लेकिन अनावश्यक बातों के लिए चिन्ताग्रस्त रहते हैं।
बुद्धिशाली है लेकिन अनावश्यक कार्य के लिए चिन्ताग्रस्त रहते है ।

दसवें भाव में कन्या राशी है, कन्या राशी कलात्मक स्वभाव को संचालित करती है, यह आपको कला आदि क्षेत्रों में निपुण बनाएगी। यह आपको आविश्कारशील और जिज्ञासू बनाएगी, यह कला और साहित्य के प्रति रूची प्रदान करेगी। आपको श्रेष्ठ वाक्शक्ति प्रदान करेगी।

आप बहुत अच्छे अध्यापक, लेखक, कूटनीतिज्ञ, राजप्रतिनिधि, इंजीनियर या कलाकार बन सकते हैं, गणित में आपकी निपुणता कम्प्यूटर प्रोग्रामर बनने में सहायक होगी। स्वास्थ्य सेवाएं, प्रकाशन, शिक्षा, नानबाई की दुकान, मिठाई बनाने या बेचनेवाला और वस्त्र आपके लिए उचित उद्योग क्षेत्र हैं।

शनि ग्रह के गुण है सहनशीलता, दृढता, धैर्य और विश्वास। आपके जन्मकुण्डली में यह देखना जरूरी है कि शनि ग्रह दसवें भाव में है। कुछ ज्योतिषियों की राय है कि आपको हमेशा सफलता प्राप्त होगी। कुछ निपुण लोग कहते कि दसवें भाव में शनि ग्रह की उपस्थिति यह सूचित करती है कि अपने उद्योग में अनेक मुसीबतों का सामना करेंगे। अन्तिम जीत हमेशा आपकी होगी। आपका दृढ़ विश्वास हमेशा आपको मुसीबतों से बचायेगा।

सारावली के श्लोकों के अनुसार, शनि ग्रह दसवें भावमें उपस्थित होता है तो वह जातक तो धनिक, विद्वान और धैर्यशाली बनता है। आप किसी संघटन, शहर या गाँव का नेता बन सकते हैं।

शनि ग्रह कन्या राशि में है। अपने उद्योग क्षेत्र में विचारात्मक प्रतिद्वंदिता से दूर रहें। ज्योतिष के अनुसार, निर्माण-निर्वाहण, परियोजन पर्यवेक्षण, छोटे व्यापार, यंत्र दुकान, मोटरखाना आदि आपके लिए उचित है।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ अन्य नतीजे भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित है।

रसायनिक चिजो की दस्तकारी, शेयर बाजार, धडाके में फोडने वाले पदार्थ, प्रतिरक्षा विभाग, सौदर्य-संवर्धन केन्द्र, खनन, कविता, मृतिका-शिल्प, वैध्यक शास्त्र , दियासलाई की डिबिया, लोहा, इस्पात, सामूहिक सेवा, ज्योतिष ।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य कमजोर दिखाई पड़ता है। उचित स्थान - मान के लिए अपनी शिक्षा और पेशे पर ध्यान देना चाहिए।

आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

एकादशेश के बारहवें स्थान पर रहने से मन क्रियाशील रहेगा। अपने परिवारजनों का सहयोग प्राप्त रहेगा। संबन्धियों से प्रगाढ संबंध बनाये रखने में आप सफल होंगे। आवश्यकता से अधिक अपव्यय और बुरे लोगों के साहचर्य से बचें। नेत्र विकार या चश्मा लगाना अनिवार्य जान पड़ता है।

सूर्य ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपके मित्र आपके स्वाधीन शक्ति को उपयोग में लेंगे। आप संतोष और सामथ्य के समानता से मालिक बन पायेंगे। आपके पिताजी को अनेक क्लेशों का सामना करना पड़ेगा। आप दीर्घ आयु के हैं।

ग्यारहवें भाव में एक शुभ ग्रह उपस्थित है। यह एक अच्छा योग है।

खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से निजी कार्यों में ज़्यादा अवरोध उत्पन्न होगा। बडों से आक्षेप होगा कि आप उनका ठीक तरीके से आदर नहीं करते। मित्रों से शत्रुता होगी। योग साधना और तीर्थाटन में अभिरूचि जागृत होगी।

बुध बारहवें स्थान पर रहा हैं।अपने फायदे के लिए दूसरों को धोखा देने में आप हिचकिचाते नहीं हैं। आपकी आपकी उपलब्धियाँ अप्पकी प्राप्त शिक्षा से मेल नहीं खाती हैं। आप किस्मत के धनी हैं।

शुक्र बारहवें स्थान पर रहा हैं। आप स्वाभाव से बुद्धिमान और रोमांटिक हैं, फ्फिर भी अनुचित लोगों से संबंध बनाते हैं। शिक्षा के स्तर के बावजूद आप अपने दोस्तों की तुलना में अधिक प्रतिभाशाली होंगे।

राहु बारहवें स्थान पर रहें हैं। आपको पानी या भोजन ए मामलों में सावधानी बरतनी चाहिए, विषबाधा होने ही संभावना रहेगी । आप गुप्त तरीकों से पैसा कमाएंगे और आपका खर्चीले स्वाभाव के होंगे।

दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

चंद्र दशा

इस दशामें आध्यात्मिक और भक्ति कार्यों में आपका अधिक ध्यान बंट जाएगा। उससे सुख और शान्ति मिलेगी। अपनों से बड़ों का आदर किया जायेगा। सुख और समृद्धि बढ़ेगी। औरतों से मिलजुल कर रहने का स्वभाव रहेगा। खान-पान में कुछ नियमित परिवर्तन होगा। अपनी तन्दुस्ती की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना है। थकान का अनुभव होने की संभावना है। शरीर की सन्धियों में दर्द हो सकता है। नये मकान के निर्माण और ऐश्वर्य प्राप्ति का योग है। परिवार में विवाह कार्य होने की संभावना है। युवतियों की ओर आकर्षित होने की संभावना है। हडि्डयों की बीमारी से बचते रहना अच्छा है। माता से संबन्धित फल प्राप्त होने की संभावना है। 20 से 30 वर्ष की आयु के मध्य यदि यह दशा पड़े तो इस दशा में विवाह होने व संतान सुख प्राप्ति का सुयोग प्राप्त होता है।

जन्म कुण्डली में चन्द्र शक्ति विहीन परिस्थिति में उपस्थित है। इसलिए अधिकतर शुभ फलों से वंचित रहना होगा। पर्याप्त परिश्रम से ही आंशिक सफलता मिलेगी।

खून की खराबी के कारण छोटी-मोटी बीमारी का शिकार होना पड़ेगा। पुराने रक्त कणों का नाश करनेवाले शरीर के अवयवों में (स्पलीन) खराबी हो सकती है। टाइफाइड होने की संभावना है। निवास स्थान में परिवर्तन होना संभव है। नौकरी छूट जाने का भय है। अकारण क्लेशों का शिकार बनना पड़ेगा। स्त्रियों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। आपकी प्रतिभा और शौर्य में कमज़ोरी का भ्रम हो सकता है। ज़्यादा विश्राम और निद्रा की इच्छा उत्पन्न होगी। गन्ने के रस से अनुकूलता प्राप्त होगी। चाँदी की अंगूठी और रेशमी कपड़ों के परिधान से लाभ हो सकता है, फिर भी ज़्यादा प्रतीक्षा से निराश भी हो सकते हैं। माँ और बहन के स्वास्थ्य की ओर ज़्यादा ध्यान देना लाभदायक हो सकता है।

(05-10-2022 >> 06-03-2024)

चन्द्रदशा में बुध की अन्तर्दशा में ख्याति मिलेगी। श्रेष्ठ गुण विशिष्टता और सद्स्वभाव प्रगति का कारण होगा। स्नेह तथा वात्सल्य प्राप्त होगा। अभ्यास क्षेत्र में और साथ ही खेल कूद के मैदान में एक सी प्रगती हो पायेगी। उत्साह के साथ उपरोक्त क्षेत्र में आगे बढने से सफलता सुनिश्चित है। इन कार्यों में सफलता के साथ साथ स्थान-मान और कीर्ति भी प्राप्त होगी। अनेक पारितोषिक मिलने की संभावना है।

(06-03-2024 >> 05-10-2024)

चन्द्रदशा में केतु की अन्तर्दशा के योग से आप भययुक्त रहेंगे। चंचल भाव प्रकट होगा। इस समय में विचार शक्ति कुंठित रहेगी इस कारण से स्वयं का या स्वयं के मित्रजनों का अहित होनेवाली घटना घटित होगी। मित्रों की प्रेरणा से मुर्खता पूर्ण वेष-परिधान धारण करने जैसी चेष्टाओं से परिहास हो सकता है।

(05-10-2024 >> 05-06-2026)

चन्द्र दशा में केतु की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में कौमार्य-काल में उद्भव होनेवाली समस्याओं से पीड़ित होंगे। भय से मुक्ति प्राप्त होगी। मनोधैर्य में वृद्धि होगी। आपका मन अनेक अव्यवहारिक कार्यों के प्रति आकर्षित होगा जो आपकी उम्र के लिए योग्य नहीं है। ये कार्य आपके और परिवार की प्रतिष्ठा की लिए उचित नहीं होंगे। श्रेष्ठ मित्रों के सानिध्य में रहना और भक्तिमय कार्यों के प्रति मन लगाना आपके लिए योग्य होगा।

(05-06-2026 >> 05-12-2026)

चन्द्र दशा में सूर्य की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में सांस्कृतिक और कलाक्षेत्र में प्रगति होगी। पढ़ाई, अभ्यास में भी सफलता संभावित है। इस समय आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन दोनों प्राप्त होंगे। सरलता से सहज़ता उपलब्ध होगी। शारीरिक और मानसिक स्तर पर विकास का अनुभव होगा। ईर्ष्यालु मित्रों की चाल लंबे समय तक टिकनेवाली नहीं है। प्रगति निश्चित है।

मंगल दशा

इस दशा में बहुत सा धन कमाया जाएगा। कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। पशु पक्षियों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी औरतों के संपर्क में रहने की संभावना है। फिज़ूल खर्च होनेवाला है। आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना होगा। शरीर में थकावट और पीलिया होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण कराना अथवा आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यत: यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। धन संपादन कार्य में अभिरुचि रहेगी। पिता और गुरुजन के प्रति अभद्र व्यवहार करने की संभावना है। मलिन और हीन वृत्ति के लोगों से मिलना जुलना पड़ेगा। व्यर्थ के धन खर्च से बचना उचित होगा। अग्नि और दुर्घटना से बचते रहना होगा। कुज की दशा में पुरुष अति उन्नति प्राप्त कर सकता है। पत्नी और पुत्र के साथ झगड़ा हो सकता है। अकारण क्रोधित होने की संभावना है। सामान्य सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

मंगल जन्म कुण्डली में बलवान रहता है तब अनुकूल स्थिति पैदा होती है और जातक अनेक शुभ फल प्राप्त करता है। राज्य-भूमि, धन और वाहनादि की प्राप्ति सरलता से हो सकती है। मित्र व बन्धुओं का सहयोग मिलेगा।

भाई और उच्चधिकारियों से बहुत सहायता प्राप्त होगी। अन्य लोगों से भी सहयोग और सुविधाएँ प्राप्त होगी। यह दशा काल बहुत लाभदायक होगा। अधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त होगा। सेना, पुलिस या इसी प्रकार के अनुशासित विभागों से संपर्क हो सकता है। इस दशा में आपकी पदोन्नति होगी। ज़मीन, सोना ताम्बा, आभूषण आदि मिलेंगे। दक्षिण की ओर यात्रा करने और लाभान्वित होने की संभावना है। स्वस्थ शरीर और स्वच्छता में विश्वास रहेगा। अपनी दृढ़ता से अपना जीवन धन्य होगा। नये मकान के निर्माण कार्य में अभिरुचि जागेगी। हर विपत्ति का सामना करने में आप समर्थ हैं।

(05-12-2026 >> 03-05-2027)

मंगल (कुज) दशा में मंगल की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में अनेक अशुभ घटनायें घटित हो सकती है। फिर भी सावधान रहने से अशुभ फल प्राप्ति की तीव्रता में कमी ला सकते हैं। तीक्ष्ण धारवाले उपकरणों का उपयोग करते वक्त सावधानी से रहना अनिवार्य है। शारीरिक स्वास्थ्य में क्षति की संभावना है। आत्मीय स्वजनों के प्रति व्यर्थ का क्रोध उत्पन्न होगा। अकारण स्वजनों से शत्रुता मोल लेनी होगी। अन्य की मिलकियत के साधन अपने अधीन रखकर आनंदीत रहने की इच्छा जागृत होगी। निराशा से मन को भरनेवाले अनेक कार्यों का सामना करना होगा। हर प्रकार की समस्याओं का सामना करना होगा।

(03-05-2027 >> 21-05-2028)

मंगल (कुज) दशा में राहू की अन्तर्दशा में निकट के विश्वासी व्यक्ति के माध्यम से लम्पटता पूर्ण व्यवहार होने की संभावना है। स्वस्नेही से होनेवाला विश्वासघात दु:खद होता है। आग से, तमंचों से, पटाखे से और रसोई घर में चुल्हों से खतरे की सूचना हैं। सावधानी से रहना लाभकारी होगा। शस्त्र धारियों से दूर रहना लाभदायक होगा। स्वचालित वाहनों (स्कूटर आदि) पर सवार होते समय सावधान रहना होगा। किसी रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी जांच करवाना ठीक रहेगा।

(21-05-2028 >> 27-04-2029)

मंगल (कुज) दशा में गुरु की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में मन प्रफुल्लित और ऊर्जापूर्ण रहेगा। मन उमंग-तरंगों से भर उठेगा। आकांक्षायें मानस पटल पर नये नये रूप लेंगी। श्रेष्ठ तीर्थ स्थल तथा पुण्य स्थलों की यात्रा की इच्छा प्रकट होगी। अनेक विद्वानों से परिचय की संभावना रखते हैं। यह उन्नति और प्रगति का समय है और इस कारण को लेकर अनेक ईर्ष्यापूर्ण व्यक्ति आपका अहित करने का प्रयास करेंगे। सावधानी आप को बचा सकती है।

(27-04-2029 >> 05-06-2030)

मंगल (कुज) दशा में शनि की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में योग्य और अयोग्य विचारों के मिश्रित मनोभाव उत्पन्न होंगे। मानसिक नियंत्रण और एकाग्रता के लिए परिश्रम करना होगा। व्यर्थ का भय और जिज्ञासा मन में ग्लानी पैदा करेगी। हर जगह सुरक्षा की कमी का भ्रम उत्पन्न होगा। ईश्वर चिंतन लाभदायक होगा। मानसिक क्लेश अपने आप क्षीण होते चले जायेंगे। सफलता के लिए कठिन परिश्रम करना होगा।

(05-06-2030 >> 03-06-2031)

मंगल (कुज) दशा में बुध की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में अनेक समस्यायें उत्पन्न हो सकती है। भीड़वाली जगह पर अथवा यात्रा के वक्त आप की वस्तुएं चुरा ली न जाये इसका ध्यान रखिए। अधर्मी लोग आपके विरुद्ध अनेक कहानियाँ बनायेंगे और अपने जाल में फंसाने की नीति अपनायेंगे। इस वक्त किसी अदृश्य अभूतपूर्व शक्ति से आपको मानसिक बल प्राप्त होगा। इस कारण स्वयं सुरक्षित रहेंगे। ज़्यादा सुविधापूर्ण निवास स्थान की खोज जारी रहेगी। नए मकान के निर्माण कार्य के साथ आपका वर्तमान कार्यक्षेत्र से संबन्ध रखेगा।

(03-06-2031 >> 30-10-2031)

मंगल (कुज) दशा में केतु की अन्तर्दशा के भोग्यकाल में बिजली या अग्नि से खतरा पैदा हो सकता है। बिजली से चलनेवाले उपकरणों से सावधान रहें। ज़रूरत पड़ने पर उनकी ठीक से जाँच करवाईए। उदर रोगों से पीड़ित होना पड़ेगा। इस कारण से आहार के प्रति ज़्यादा ध्यान देना आवश्यक है।

(30-10-2031 >> 29-12-2032)

मंगल दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में छोटे छोटे कार्यों में भी आपका मनोनियन्त्रण नष्ट होने की संभावना है। बार बार क्रोधित होना पड़ेगा। आत्म नियंत्रण की कमी का अनुभव होगा। तीक्ष्ण धारवाले आयुध से दूर रहना लाभदायी होगा। स्व-गृह से दूर या एकान्त में रहना पड़ेगा। लंबी यात्रा संभावित है। पारिवारिक परिस्थिति अच्छी होगी। अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

(29-12-2032 >> 06-05-2033)

मंगल दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपको अनेक अधिकार प्राप्त होंगे। कार्यभार और कर्तव्यभार भी बढ़ेगा। आपका अधिकार सुदृढ होगा। आप को पुरस्कार या ऊपर से मान्यता प्राप्त होगी। शायद सरकार से या उच्चा अधिकारियों से मान्यता प्राप्त होगी। स्वजनों के बीच शत्रु पैदा होंगे। यदि आप राजकीय क्षेत्र में हैं तो पदोन्नति की आशा कर सकते हैं।

(06-05-2033 >> 05-12-2033)

मंगल की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में आय व सम्मान के स्रोतों में वृद्धि, नानाविधि लाभ, विवाहादि मांगलिक कार्यों का संपादन, शिक्षा क्षेत्र में प्रगति, शत्रुभय और भवन वाहनादि के सुख में वृद्धि आदि फल प्राप्त होना संभव होगा।

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और अत्यधिक आपसी विरोध आदि फल प्राप्त होंगे।

गृह योग स्थिति के अनुसार राहु अनुकूल दशा उत्पन्न करने वाला है। अनेक शुभ फल सरलता से प्राप्त होंगे।

राहु अच्छे स्थान में रहने से आपको शुभ फल प्राप्त होगा। धोखेबाज़ी और अयोग्य उपाय से आपका बल बढ़ेगा, पदोन्नति होगी और अधिकार प्राप्त होगा। अनुचित कामों से आपके संबन्धों का दायरा बढ़ेगा। कर न देकर सरकार को धोखा दिया जाना संभव होगा। औरतों की संगति में रहकर आनन्द उठाकर उनसे संपत्ति प्राप्त की जायेगी। आवास स्थान बदलने की संभावना है। राहु आपको धनवान बना देगा। अयोग्य कार्यों से ख्याति प्राप्त होगी।

(05-12-2033 >> 17-08-2036)

राहु दशा में राहु की अन्तर्दशा में आपका भाग्य अनुकूल नहीं रहेगा। पारिवारिक परिस्थिति में एक तरह की शोक लहर फैलती रहेगी। वर्तमान स्थान को कुछ दिनों के लिए छोड़ अन्यत्र जाने का विचार बन सकता है। दु:ख के बाद सुख, अन्धकार के बाद प्रकाश यह जीवन का एक चिरन्तन सत्य है। पुरुषार्थ से ही सफलता मिलेगी।

(17-08-2036 >> 11-01-2039)

राहु की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उच्चाधिकारियों तथा बड़ों का व्यवहार अनुकूल रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। परिवार के लिए यह समय विवाह आदि मांगलिक कामों के लिए अनुकूल होगा। नये मेहमान का आगमन होने की संभावना है।

(11-01-2039 >> 17-11-2041)

राहु की दशा में शनिश्चर की अन्तर्दशा में शारीरिक अस्वस्थता उत्पन्न होने की संभावना है। जिसका शरीर पित्तज प्रकृति का हो उन्हें ख़ास ध्यान रखना होगा। स्नेहीजनों का वियोग सहना होगा। विदेश यात्रा की संभावना है। इस कारण मानसिक तनाव पैदा हो सकता है। इस कारण शरीर भी कमज़ोरी महसूस करेगा।

(17-11-2041 >> 05-06-2044)

राहु दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी मान्य व्यक्तियों तथा ऊँचे परिवार के लोगों से मैत्री स्थापित होगी। मित्रों की संख्या बढ़ेगी। मित्रता में स्थिरता प्राप्त होगी। ऊँचे स्थान प्राप्त होंगे। मान्यता बढ़ेगी। मानसिक शक्ति बढ़ने के कारण अपने कार्यों पर ज़्यादा और अच्छा प्रभाव पड़ेगा। धन लाभ की संभावना है।

(05-06-2044 >> 23-06-2045)

राहु दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को ज्वर से पीड़ित होना पड़ेगा। तीक्ष्ण धारवाले आयुधों और उपकरणों से सावधानी बरतना होगा। रसायनिक वस्तु का बड़े ध्यान से उपयोग किया जाय। अप्रत्याशीत घटनायें घट सकती है। यूँ तो बिजली के साधनों से जीवन की सुविधा बढ़ती है, लेकिन इस समय में उससे असुविधा उत्पन्न हो सकती है। मन से जागृत रहना लाभदायक होगा।

(23-06-2045 >> 23-06-2048)

राहु दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में अपने साथियों से दु:ख भोगना पड़ेगा। आत्मनियंत्रण लाना कठिन होगा। अपने लोगों के साथ मतभेद न हो उसका ख्याल रखें। विवाह के लिए यह योग्य समय माना जाता है। विवाह या प्रणय संबन्ध विषय में अनुकूल फलों की आशा कर सकते हैं।

गुरु दशा

05-12-2051 से प्रारंभ

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछडना पड सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

गुरु बलवान रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

शनि दशा

05-12-2067 से प्रारंभ

शनि, दु:ख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दु:ख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड़ सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

बुध दशा

05-12-2086 से प्रारंभ

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। नए भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

सप्तवर्गीय गणित में बुध बलवान है। अधिकतर शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस दशा में अच्छी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का योग होगा। लिखना, पढ़ना, व्याख्यान (भाषण) देना आदि में पूरा समय लग जा सकता हैं। दूसरे लोग आपके अधिकार में रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में एक मध्यवर्ती होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। किसी वस्तु के उत्पादन के एजेंट होकर या किसी प्रकाशन से अच्छी आमदनी मिलने की संभावना है। मित्रों और रिश्तेदारों की सहायता मिलेगी। उत्तर की ओर यात्रा संभव है और खूब धन कमाने का योग है। युवा लोगों के परिचय से भी अच्छा लाभ प्राप्त होगा। लेखन-प्रकाशन का काम भी लाभदायक रहेगा।

गोचर फल

नाम	: sample (पुरुष)
जन्म राशी	: मेष
जन्म नक्षत्र	: कृत्तिका
ग्रहस्थिती	: 12-नवम्बर-2023
अयनांश	: चैत्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में शास्त्रानुसार सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्मकुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में थोड़ा न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्मराशि से अगली तीन राशियों में सूर्य क्या फल दे सकता है, वह नीचे दर्शाया जा रहा है।

(17- अक्तूबर-2023 >> 16- नवम्बर-2023)

इस समय सूर्य सातवाँ भाव से संचार करेगा।

विद्यालय द्वारा आयोजित की गयी उल्हास यात्रायें, मित्रों के साथ निर्धारित मात्रा में, अनिवार्य कारणों को लेकर कम हो जायेंगी अथवा उसके समय में परिवर्तन हो जायेगा। आर्थिक दृष्टि से देखें तो आवश्यक धन की प्राप्ति में विलंब होगा। स्वास्थ्य को प्रभावित करनेवाले हर प्रश्न की ओर ठीक ध्यान देना आवश्यक है। नित्य कार्य के साथ रोज़ कुछ आराम और व्यायाम करना अति लाभदायी होगा। कुछ समय विनोद और मनोरंजन में व्यतीत करना अनिवार्य है। इससे मानसिक तनाव कम होगा और आक्रमक बीमारी से बच सकते हैं।

(16- नवम्बर-2023 >> 16- दिसम्बर-2023)

इस समय सूर्य आठवाँ भाव से संचार करेगा।

बालावस्था में व्यर्थ का भय आपके मन में घर कर गया है। बड़ों का कोई कटु व्यवहार या विद्यालय में किसी शिक्षक से मिले दंण्ड इसका कारण हो सकता है। किसी मित्र का खास प्रकार का व्यवहार भी इसका कारण हो सकता है। इस प्रकार के भय से जल्द मुक्त होना अनिवार्य है। इसलिए बड़ी क्षमता से उपाय करने होंगे। उदर रोगों से मुक्त रहने के लिए खान-पान में नियंत्रण रखना अनिवार्य है। अपने संवेदनशील स्वभाव को बदलने से आपकी आधी समस्याओं का निराकरण हो जायेगा। युवक और युवतियों के साथ भेदभाव के बिना व्यवहार करना पसंद करते हो। युवावस्था में कदम रखते वक्त अपने मन को नियंत्रण में रखना लाभदायक होगा।

(16- दिसम्बर-2023 >> 15- जनवरी-2024)

इस समय सूर्य नवम भाव से संचार करेगा।

इच्छानुसार सब कुछ प्राप्त होता नहीं है। इस प्रकार की निराशाजनक मिथ्या भ्रमण होती रहेगी। अपनी कार्यशक्ति और स्थान के युक्त कार्यों को हाथ में लेने से गलत भ्रमणा से बच सकते हैं। मिथ्या पराजय और भय से मुक्त हो सकते हैं। कौमार्य के कारण चंचलता प्रकट होगी और साथ ही छोटी-मोटी भूल होने की संभावना है। इस कारण सतर्क रहना योग्य होगा। इस उम्र में नटखट स्वभाव प्रकट होने की संभावना है। नट-खट स्वभाव तो पहले से ही था। युवावस्था में कदम रखते ही आत्मसंयम का पालन करें तो गौरवपूर्ण कार्य बन सकता है।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि में लगभग एक साल तक स्थान ग्रहण करता है। शास्त्रों में गुरु के प्रभाव को अति प्रधानता दी जाती है।

(23- अप्रैल-2023 >> 1- मई-2024)

इस समय गुरु जन्म भाव से संचार करेगा।

असाधारण विकार प्रकट होंगे। क्रोध अपनी पराकाष्ठा में पहुँच जायेगा। युवक अपना क्रोध अपने भाई बहन या लालन-पालन करनेवालों के प्रति ही प्रकट कर सकता है। क्रोध का कारण अस्पष्ट रहेगा। आप समझ नहीं पायेंगे। प्रायोगिक कार्यों में अभिरुचि कम रहेगी और काल्पनिक दुनिया में ज़्यादा रहना होगा। इस कारण अनिष्ट घटनायें घटित होंगी। मन क्लेश से भर उठेगा। इस समय असाधारण सतर्कता बनाये रखना ही बुद्धिगम्य माना जा सकता है। युवावस्था में रखनेवाले कदम और संयम दोनों का तालमेल बैठ जाये तो जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं से बच पायेंगे।

(2- मई-2024 >> 15- मई-2025)

इस समय गुरु दूसरा भाव से संचार करेगा।

दीर्घ समय से लोगों ने जिस प्रेम और मान्यता की अपेक्षा रखी गई होगी वह अब धीरे-धीरे साकार होती चली जायेगी। इस सफलता से अनेक कार्यों में प्रोत्साहन प्राप्त होगा। स्वदेश

में आयोजित अनेक सामूहिक, सांस्कारिक कार्यों में और कलाक्षेत्र में भाग लेने का मौका प्राप्त होगा। संक्षिप्त में परिवार को गौरव प्राप्त करानेवाले कार्य आपके माध्यम से होंगे। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य चिन्ता का कारण बन सकता है।

शनि का गोचरफल।

साधारण स्थिति में शनि से दु:ख ही प्राप्त होता है। शनि के योग से मानसिक अस्वस्थता का अनुभव होता है। साथ ही साथ मन उद्वेग से विचलित हो उठता है। फिर भी, कभी-कभी, अप्रतिक्षित मार्ग से, शनि से, लाभ भी होता है। हर राशि में शनि दो साल तक स्थान ग्रहण करता है।

(18- जनवरी-2023 >> 29- मार्च-2025)

इस समय शनि ग्यारहवां भाव से संचार करेगा।

आन्तरिक और बाह्यपरिवर्तनों का बोध प्राप्त होगा। कुछ घटनायें विनोदपूर्ण आनन्द दिलानेवाली होगी। यह घटनायें सद्भाग्य चिन्ह के स्वरूप होंगी। अन्य लोगों को आपकी शक्ति और पौरुषत्व का अनुभव होगा। थोडा विलंब होगा फिर भी सम्मान, मान्यता और अनेक उपहार प्राप्त होंगे। परिवार के बीच अभिवृद्धि और आश्चर्य दोनों प्रकट होंगे। समय के व्यय से बचना अनिवार्य है। कार्यक्षेत्र में परिश्रम और मेहनत का फल अवश्य प्राप्त होगा। अनेक प्रकार की विक्षिप्तता प्रकट होगी। आत्मसंयम का पालन और मनोबल के आधार पर समता बनाये रखना ही बुद्धिगम्य माना जायेगा। अधिकतर कामों में सफलता प्राप्त होगा ।

(30- मार्च-2025 >> 3- जून-2027)

इस समय शनि बारहवाँ भाव से संचार करेगा।

शनि की साढे साती का यह प्रारंभकाल है। जीवन में तीव्र उतार चढाव पैदा करनेवाला समय है। शिक्षकों से, बड़ों से और मित्रों से अनेक प्रकार के दबाव पैदा होंगे। कुछ समस्याओं से आप तंग आ जायेंगे। आपकी साधारण बातों का लोग उल्टा ही अर्थ लगायेंगे। मुश्किलों से बचने के लिए कहीं दूर जाने की इच्छा पैदा होगी। सहयोगियों से उपेक्षित होने की संभावना है। छोटी-मोटी बातों से मन उद्वेग से भर उठेगा। स्वयं प्रयत्न से समस्या का हल निकालने की कोशिश से कामयाब होना कठिन है। छोटी-मोटी कठिनाईयों को समझने की कोशिश करनी चाहिए। प्रयत्नों के फल स्वरूप जीवन में सफलता साकार न हो तो निराश न हो। यह शनि के गोचर के प्रभाव से हो रहा है। दु:ख अधिक समय तक थोडा ही टिकनेवाला है। इस कारण आप कठिन परिश्रम करें।

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.

First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

LifeSign 14.0.0 Build 35 IAS_33746211449805622

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.